इस्लाह़ क़ुरआन-ओ-ह़दीष की रौशनी में

अरबी हिन्दी और रोमन

وَسۡـَٔلُواْ ٱللَّهَ مِن فَضۡلِهِۦٓ

और अल्लाह: से उसका फ़ज़्ल माँगा करो

(सूर: अन्-निसा 4, आयत 32)

दअ़वत-ए-तौह़ीद
DAWAT-E-TAUHEED

FREE GIFT

NOT FOR SALE

सैयद नौशाद हुसैन

97010 68770

أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ

بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً

نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

میرا پیغام لوگوں کو پہنچاؤ! اگرچہ ایک ہی آیت ہو

(Sahih Bukhari : 3461)

नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया :

मेरा पैग़ाम लोगों तक पहुंचाओ, अगरचे एक ही आयत हो.

(सह़ीह़ बुख़ारी: 3461)

Nabi Kareem ﷺ Ne Farmaya:

Mera Paighaam Logon Tak Pahunchaao Agarche Ek Hi Aayat Ho.

(Sahih Bukhari : 3461)

بسم الله الرحمن الرحيم

अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाही व बरकातहु.

अल-ह़म्दुलिल्लाह:, मैं सैयद नौशाद ह़ुसैन, जो पिछले कई वर्षों से दअ़वत के मैदान में ख़िदमात अंजाम दे रहा हूँ, आप तक अपनी तह़क़ीक़ और शैख़ ताहिर षनाबिली ह़फ़ीज़हुल्लाह: की निगरानी में, इस किताब को पेश कर रहा हूँ. इस किताब को पढ़कर अपनी और दूसरों की इस्लाह़ करें, इन् शा अल्लाह:! जज़ाक-अल्लाहु-ख़ैरन.

दुआ ही इबादत है और तुम्हारे रब ने हुक्म दिया मुझसे दुआ करो.

وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ
عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ

और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा है कि : मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआयें कुबूल करूँगा. बेशक जो लोग तकब्बुर की बुनियाद पर मेरी इबादत से मुँह मोड़ते हैं, वो ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे.

Aur tumhaare Parwardigaar ne kaha haike: Mujhe pukaaro, Main tumhaari duayein qubool karunga, Beshak jo log takabbur ki buniyaad par meri ibaadat se munh modte hain, Wo zaleel hokar jahannum mein daakhil honge.

(सूर: मोमिन 40, आयत 60)

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझी से मदद माँगते हैं.

Ham sirf teri hi ibaadat karte hain Aur sirf tujh hi se madad chahte hain.

(सूर: फ़ातिहा 1, आयत 4)

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ
اِذَا دَعَانِ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ

जब मेरे बंदे मेरे बारे में आप से सवाल करें तो आप कह दें कि मैं बहुत ही क़रीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार को, जब भी वह मुझे पुकारे, कुबूल करता हूँ. इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मान लिया करें और मुझ पर ईमान रखें, यही उनकी भलाई का कारण है.

Jab mere bande mere baare mein aap se sawaal kare toh, Aap keh de ke: main bahot hi qareeb hun, Har Pukaarne waale ki pukaar ko jab bhi wo mujhe Pukaare qubool karta hun. Is liye logon ko bhi chaahiye keh wo meri baat maan liya kare aur mujh par eemaan rakhe, yahi unki bhalaayi ka baayis hai.

(सूर: बक़रा: 2, आयत 186)

दुआ इबादत ही है:

عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ:

الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ، وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ (سورة غافر آية 60)

हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया :
दुआ़ इबादत ही है. तुम्हारे रब ने फरमाया है :
मुझे पुकारो, मैं क़ुबूल करूँगा.

Hazrat Nauman bin Basheer (Razi Allahu Anhu) se riwaayat hai keh
Nabi ﷺ ne farmaya: Dua ibaadat hi hai. Tumhaare Rabb ne farmaya hai:
Mujhe Pukaaro, Main qubool karunga.

(सुनन अबू दाऊद: 1479)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

«لِيَسْأَلْ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ كُلَّهَا حَتَّى يَسْأَلَهُ شِسْعَ نَعْلِهِ إِذَا انْقَطَعَ»

हज़रत अनस (रज़ि अल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह: ने फ़रमाया:
तुम में से हर शख़्स को अपनी तमाम ज़रूरतें अपने रब से माँगनी चाहिए
हत्ता कि जब उसके जूते (Shoes/Sleeper) का तस्मा टूट जाए तो
उसके बारे में भी उसी से सवाल करना चाहिए.

Hazrat Anas (Razi Allahu Anhu) bayaan karte hain, Rasoolullah ﷺ ne farmaya:
Tum me se har shakhs ko apni tamam zaruratein apne Rabb se maangni Chahiye
Hatta ke jab uske joote (Shoes/Sleeper) ka tasma toot-jaaye toh
uske baare mein bhi usi se sawaal karna chaahiye.

(मिश्कातुल मसाबीह:2251)

नबी-ए-करीम (ﷺ) ने फरमाया :
नमक (salt) भी अल्लाह: से माँगो और हर छोटी और बड़ी चीज़
अल्लाह: ही से माँगो।

Nabi-e-Kareem ﷺ ne farmaya:
Namak (salt) bhi Allah se maango aur har chhoti aur badi cheez
Allah hi se maango.

(शु'अब अल-ईमान, बैहकी:10924)

रसूलुल्लाह: ﷺ ने सिखाया
जो कुछ माँगो सिर्फ़ अल्लाह: से माँगो

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كُنْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا، فَقَالَ: يَا غُلَامُ، إِنِّي أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ:
احْفَظِ اللهَ يَحْفَظْكَ احْفَظِ اللهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ إِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللهَ وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللهِ
وَاعْلَمْ أَنَّ الْأُمَّةَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلَى أَنْ يَنْفَعُوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللهُ لَكَ
وَلَوِ اجْتَمَعُوا عَلَى أَنْ يَضُرُّوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَضُرُّوكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللهُ عَلَيْكَ
رُفِعَتِ الْأَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ، قَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ.

अब्दुल्लाह: बिन अब्बास (रज़ि अल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मैं एक दिन रसूल अल्लाह: (ﷺ) के साथ सवारी पर पीछे था, आपने फ़रमाया : "ऐ लड़के! बेशक मैं तुम्हें कुछ अहम बातें बतला रहा हूँ: तुम अल्लाह: के अहकाम की हिफ़ाज़त करो, वह तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमायेगा, तुम अल्लाह: के हुकूक का ख़याल रखो उसे तुम अपने सामने पाओगे, जब तुम कोई चीज़ माँगो तो सिर्फ़ अल्लाह: से माँगो, जब तुम मदद चाहो तो सिर्फ़ अल्लाह: से मदद तलब करो, और ये बात जान लो कि अगर सारी उम्मत भी जमा हो कर तुम्हें कुछ नफ़ा पहुँचाना चाहे तो वह तुम्हें उससे ज़्यादा: कुछ भी नफ़ा नहीं पहुँचा सकती जो अल्लाह: ने तुम्हारे लिए लिख दिया है, और अगर वह तुम्हें कुछ नुक़्सान पहुँचाने के लिए जमा हो जाए तो उससे ज़्यादा: कुछ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती जो अल्लाह: ने तुम्हारे लिए लिख दिया है, क़लम उठा लिए गए और (तक़दीर के) सहीफ़े ख़ुश्क हो गए हैं."

Abdullah Bin Abbas (Razi Allahu Anhu) kehte hain keh, Main ek din Rasool Allah ﷺ ke saath sawaari par peeche tha, Aap ﷺ ne farmaya: "Aye Ladke! Beshak main tumhein chand Ahem baatein batla raha hun: Tum Allah ke Ahkaam ki Hifaazat karo, woh tumhaari Hifaazat farmayega, tum Allah ke huqooq ka khayaal rakho, usey tum apne saamne paaoge, jab tum koi cheez maango to sirf Allah se maango, jab tum madad chaaho to sirf Allah se madad talab karo, aur yeh baat jaan-lo keh, agar saari ummat bhi jama ho kar, tumhein kuch Nafa (faida) pahunchaana chaahe toh, woh tumhein ussey zyada kuch bhi nafa nahi pahunchaa sakti, jo Allah ne tumhaare liye likh diya hai, aur agar woh tumhein kuch nuqsaan pahunchaane ke liye jama ho jaaye toh, ussey zyada kuch nuqsaan nahi pahunchaa sakti, jo Allah ne tumhaare liye likh diya hai, Qalam utha-liye gaye aur (taqdeer ke) sahife khushk (dry) ho gaye hain.

(सुनन तिर्मिज़ी हदीष : 2516)

अल्लाह: का हुकुम है सिर्फ़ मुझ से ही मांगो

عَنْ رِفَاعَةَ الْجُهَنِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:
إِنَّ اللهَ يُمْهِلُ حَتَّى إِذَا ذَهَبَ مِنَ اللَّيْلِ نِصْفُهُ أَوْ ثُلُثَاهُ، قَالَ: لَا يَسْأَلَنَّ عِبَادِي غَيْرِي، مَنْ يَدْعُنِي أَسْتَجِبْ لَهُ، مَنْ يَسْأَلْنِي أُعْطِهِ، مَنْ يَسْتَغْفِرْنِي أَغْفِرْ لَهُ، حَتَّى يَطْلُعَ الْفَجْرُ.

हज़रत रिफाअह: जुहनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है।
रसूल अल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया :
बेशक अल्लाह: मोहलत देता है (अपने बंदों को कि वो सोएं और आराम करें) यहाँ तक कि जब रात का आधा या इसका दो तिहाई हिस्सा गुज़र जाता है, तो फ़रमाता है:
मेरे बंदे! मेरे सिवा किसी से हरगिज़ न मांगे **जो कोई मुझे पुकारेगा मैं उस की दुआ क़ुबूल करूंगा.** जो मुझ से सवाल करेगा मैं उसे दूंगा **जो मुझ से मग़फ़िरत चाहेगा मैं उसे बख़्श दूंगा।**
तुलू-ए-फ़ज्र तक यही हाल रहता है।

Hazrat Rifa'ah (bin 'Arabah) Juhani (Razi Allahu Anhu) se riwayat hai.
Rasool Allah ﷺ ne Farmaya:
Beshak Allah mohlat deta hai (apne bandon ko keh, woh soyein aur aaraam karein) yahan tak ke jab Raat ka aadha ya iska do tihaayi hissa guzar-jaata hai toh, farmata hai:
Mere bande! Mere siwaa kisi se hargiz na maangein
Jo koi mujhe pukaarega, main us ki dua qubool karunga.
Jo mujh se sawaal karega, main usey dunga.
Jo mujh se maghfirat chaahega, main usey bakhsh dunga.
tuloo-e-fajr tak yahi haal rehta hai."

(सुनन इब्ने माजा : 1367)

अल्लाह: का हुक्म है सिर्फ़ मुझ से माँगो

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ لَمْ يَدْعُ اللهَ سُبْحَانَهُ غَضِبَ عَلَيْهِ

अबू हुरैरा: (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) कहते हैं कि रसूलुल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया:
जो शख़्स अल्लाह: तआ़ला से दुआ़ नहीं करता तो अल्लाह:
तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक (ग़ुस्सा) होता है।"

Abu Hurairah (Razi Allahu Anhu) kehte hain ke Rasool Allah ﷺ ne farmaya:
Jo shakhs Allah Ta'ala se dua nahi karta toh
Allah ta'ala us par ghazabnaak (gussa) hota hai.

(सुनन इब्ने माजा : 3827, सुनन तिर्मिज़ी : 3373)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ، أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، قَالَ :
يَتَنَزَّلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ يَقُولُ :
مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ ، مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ ، مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ .

हज़रत अबू हुरैरा: (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) रिवायत करते हैं कि
रसूलुल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया:
"हमारा रब तबारक व तआ़ला हर रात आसमान-ए-दुनिया की त़रफ़ नुज़ूल फ़रमाता है, उस वक़्त जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है, और फ़रमाता है - कौन है जो मुझ से दुआ़ करता है कि मैं उसकी दुआ़ क़ुबूल करूँ? कौन है जो मुझ से माँगता है कि मैं उसे दूँ? कौन है जो मुझ से बख़्शिश त़लब करता है कि मैं उसे बख़्श दूँ?"

Hazrat Abu Hurairah (Razi Allahu Anhu) riwaayat karte hain keh
Rasool Allah ﷺ ne farmaya:
Hamaara Rabb tabarak-ta'ala har raat aasmaan duniya ki taraf nuzool farmata hai us waqt jab raat ka aakhri tihaayi hissa baaqi rah jaata hai aur farmata hai, Kaun hai jo mujh se dua karta hai keh, Main uski dua quboool karun, Kaun hai jo mujh se maangta hai keh, Main usey dun, Kaun hai jo mujh se baqshish talab karta hai keh Main uski baqshish karun.

(सहीह बुख़ारी : 6321)

वज़ाहत: अल्लाह: तआ़ला ने हमको यह हुक्म दिया है - सिर्फ़ मुझ से दुआ़ करो, सिर्फ़ मुझ से माँगो,तुम जो चाहो माँगो, मैं अ़ता करूँगा. इसके बाद अगर कोई अल्लाह: को छोड़कर क़ब्रों पर जाकर फ़ौत-शुदा: लोगों से माँगेगा, तो अल्लाह: हरगिज़ मआ़फ़ नहीं करेगा, क्योंकि अल्लाह: अपने साथ किसी को शरीक करना पसंद नहीं करता. मुश्रिक का ठिकाना हमेशा के लिए जहन्नुम में होगा.

अल्लाह: सब कुछ देखता और सुनता है

عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزَاةٍ، فَلَمَّا قَفَلْنَا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ فَكَبَّرَ النَّاسُ تَكْبِيرَةً وَرَفَعُوا بِهَا أَصْوَاتَهُمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَصَمَّ وَلَا غَائِبٍ، هُوَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ رُءُوسِ رِحَالِكُمْ.
(حديث مرفوع) (حديث موقوف) ثُمَّ قَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ، أَلَا أُعَلِّمُكَ كَنْزًا مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम रसूल अल्लाह: के साथ एक ग़ज़वा में थे. जब हम लौटे और हमें मदीना: दिखाई देने लगा तो लोगों ने तकबीर कही और बुलंद आवाज़ से तकबीर कही. रसूल अल्लाह: ने फ़रमाया: "तुम्हारा रब बहरा नहीं है और न ही वह ग़ायब-ओ-ग़ैर हाज़िर है, वह तुम्हारे दरमियान मौजूद है, वह तुम्हारे कजावों और सवारियों के दरमियान (यअ़नि बहुत क़रीब) है. "फिर आपने फ़रमाया: "अब्दुल्लाह: बिन क़ैस! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बताऊँ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह:" (जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है).

Abu Musa Ash'ari (Razi Allahu Anhu) kehte hain keh, Ham Rasool Allah ﷺ ke saath ek ghazwa mein they. Jab ham laute aur hamein Madinah dikhaayi dene laga to logon ne takbeer kahi aur buland awaaz se takbeer kahi. Rasool Allah ﷺ ne farmaya: Tumhaara Rabb behra nahi hai aur na hi woh ghaeb-o-ghair haazir hai Woh tumhaare darmiyaan maujood hai, Woh tumhaare kajawon aur sawaariyon ke darmiyaan (yaani bahot qareeb) hai. Phir Aap ﷺ ne farmaya: Abdullah bin Qais! Kya main tumhein Jannat ke khazaano mein se ek khazaana na bataaon? Aap ne irshad farmaya:"La Hawla Wala Quwwata illa Billah" (Jannat ke khazaano mein se ek khazaana hai).

(सुनन तिर्मिज़ी : 3374)

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ

भला कौन है जो बेक़रार की दुआ़ क़ुबूल करता है, जब वह उसे पुकारता है और तकलीफ़ दूर कर देता है, और तुम्हें ज़मीन में (पिछलों का) जानशीन बनाता है? क्या अल्लाह: के साथ कोई और मअ़बूद है? तुम लोग बहुत कम नसीह़त ह़ासिल करते हो.

Bhalaa kaun hai jo be-qaraar ki dua qubool karta hai, Jab woh usey pukaarta hai aur takleef door kar-deta hai, Aur tumhein zameen mein (pichlon ka) jaana'sheen banaata hai? Kya Allah ke saath koi aur ma'bood hai? Tum log bahot-kam naseehat haasil karte ho.

(सूर: अन्-नमल 27:62)

वज़ाह़त: इस आयत से वाज़ेह़ हुआ कि जो लोग ग़ैरुल्लाह: से दुआ़ करते हैं, वो लोग ग़ैरुल्लाह: को अल्लाह: का शरीक करते हैं

सहाबा किराम का अक़ीदा ग़ैब की बातें सिर्फ़ वह़्यी के ज़रिए

قَالَ : سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، يَقُولُ : إِنَّ أُنَاسًا كَانُوا يُؤْخَذُونَ بِالْوَحْيِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، وَإِنَّ الْوَحْيَ قَدِ انْقَطَعَ ، وَإِنَّمَا نَأْخُذُكُمُ الْآنَ بِمَا ظَهَرَ لَنَا مِنْ أَعْمَالِكُمْ ، فَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا خَيْرًا أَمِنَّاهُ وَقَرَّبْنَاهُ وَلَيْسَ إِلَيْنَا مِنْ سَرِيرَتِهِ شَيْءٌ اللَّهُ يُحَاسِبُهُ فِي سَرِيرَتِهِ ، وَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا سُوءًا لَمْ نَأْمَنْهُ وَلَمْ نُصَدِّقْهُ ، وَإِنْ قَالَ إِنَّ سَرِيرَتَهُ حَسَنَةٌ .

हज़रत उ़मर बिन ख़त़ाब (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने बयान किया कि, रसूल अल्लाह: ﷺ के ज़माने में लोगों का वह़्यी के ज़रिए मुआख़ज़ा हो जाता था. लेकिन अब वह़्यी का सिलसिला ख़त्म हो गया है और हम सिर्फ़ उन ही उमूर में मुआख़ज़ा करेंगे जो तुम्हारे अ़मल से हमारे सामने ज़ाहिर होंगे. इस लिए जो कोई ज़ाहिर में हमारे सामने ख़ैर करेगा, हम उसे अमन देंगे और अपने क़रीब रखेंगे. उसके बात़िन से हमें कोई सरोकार नहीं होगा. उसका ह़िसाब तो अल्लाह: तआ़ला करेगा और जो कोई हमारे सामने ज़ाहिर में बुराई करेगा तो हम भी उसे अमन नहीं देंगे और न हम उसकी तस्दीक़ करेंगे ख़्वाह वह यह ही कहता रहे कि उसका बात़िन अच्छा है.

Hazrat Umar bin khattab (Razi Allah Anhu) ne bayaan kiya ki, Rasool Allah ﷺ ke zamaane mein logon ka wahi ke zariye muakhza ho jaata tha. Lekin ab wahee ka silsila khatam ho gaya hai, Aur ham sirf un'hi umoor mein muakhza karenge, jo tumhaare amal se hamaare saamne zaahir honge. Is liye jo koi zaahir mein hamaare saamne khair karega, Ham usey aman denge, Aur apne qareeb rakhenge. Uske baatin se hamein koi sarokaar nahi hoga. Uska hisaab to Allah ta'ala karega, Aur jo koi hamaare saamne zaahir mein buraayi karega to ham bhi usey aman nahi denge aur na ham uski tasdeeq karenge, khwah woh yeh hi kehta rahe ke uska baatin achcha hai.

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 2641)

अल्लाह: का वली कौन है?

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ، قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرَ ، فَلَمْ نَغْنَمْ ذَهَبًا وَلَا فِضَّةً ، إِلَّا الْأَمْوَالَ وَالثِّيَابَ وَالْمَتَاعَ ، فَأَهْدَى رَجُلٌ مِنْ بَنِي الضُّبَيْبِ ، يُقَالُ لَهُ : رِفَاعَةُ بْنُ زَيْدٍ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غُلَامًا ، يُقَالُ لَهُ : مِدْعَمٌ ، فَوَجَّهَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى وَادِي الْقُرَى ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِوَادِي الْقُرَى بَيْنَمَا مِدْعَمٌ يَحُطُّ رَحْلًا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، إِذَا سَهْمٌ عَائِرٌ فَقَتَلَهُ ، فَقَالَ النَّاسُ : هَنِيئًا لَهُ الْجَنَّةُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : كَلَّا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ ، إِنَّ الشَّمْلَةَ الَّتِي أَخَذَهَا يَوْمَ خَيْبَرَ مِنَ الْمَغَانِمِ لَمْ تُصِبْهَا الْمَقَاسِمُ ، لَتَشْتَعِلُ عَلَيْهِ نَارًا ، فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ النَّاسُ ، جَاءَ رَجُلٌ بِشِرَاكٍ ، أَوْ شِرَاكَيْنِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَقَالَ : شِرَاكٌ مِنْ نَارٍ ، أَوْ شِرَاكَانِ مِنْ نَارٍ .

हज़रत अबू हुरैरा: (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने कहा है कि हम नबी करीम ﷺ के साथ ख़ैबर की लड़ाई के लिए निकले. इस लड़ाई में हमें सोना, चाँदी ग़नीमत में नहीं मिला था बल्कि दूसरे अमवाल, कपड़े और सामान मिला था. फिर बनी-ख़बीब के एक शख़्स रिफ़ाअ: बिन ज़ैद नामी ने आप हज़रत ﷺ को एक ग़ुलाम हदिया में दिया, ग़ुलाम का नाम मिदअ़म था. फिर आप हज़रत ﷺ वादी-ए-क़ुरा की तरफ़ मुतवज्जह हुए और जब आप वादी-ए-क़ुरा: में पहुँच गए तो मिदअ़म को जब कि वह आप हज़रत ﷺ का कजावा: दुरुस्त कर रहा था, एक अनजान तीर आकर लगा और उसकी मौत हो गई. लोगों ने कहा कि जन्नत इसे मुबारक हो, लेकिन आप हज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि हरगिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वह कम्बल जो इसने तक़सीम से पहले ख़ैबर के माले-ग़नीमत में से चुरा लिया था, वह उस पर आग का अंगारा बनकर भड़क रहा है. जब लोगों ने यह बात सुनी तो एक शख़्स चप्पल का तस्मा या दो तस्मे लेकर आप हज़रत ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप हज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि यह आग का तस्मा है या दो तस्मे हैं.

Hazrat Abu Hurairah (Razi Allah Anhu) Ne kaha hai, Ham Nabi Kareem ﷺ ke saath khaibar ki ladaayi ke liye nikle. Is Ladaayi mein hamein sona/chaandi ghanimat mein nahi mila tha, Balki doosre amwaal, Kapde aur samaan mila tha. Phir Bani-Khaib ke ek shakhs Rifa'ah bin Zaid naami ne Aap Hazrat ﷺ ko ek ghulaam hadiyah mein diya ghulaam ka naam Mid'am tha. Phir Aap Hazrat ﷺ Waadi-e-Qur'ah ki taraf mutawajjah huwe aur jab aap Waadi-e-Qur'ah mein pahunch'gaye to Mid'am ko jab ki wo Aap Hazrat ﷺ ka kajawah durust kar raha tha, ek anjaan teer aakar laga aur uski maut ho-gai. Logon ne kaha ki jannat isey mubarak ho, Lekin Aap Hazrat ﷺ ne farmaya ki hargiz nahi, Is zaat ki qasam jiske haath mein meri jaan hai wo kambal jo isne taqseem se pehle khaibar ke maale ghanimat mein se churaa liya tha, wo us par Aag ka angaara ban-kar bhadak raha hai. Jab logon ne ye baat suni toh ek shakhs chappal ka, tasmah ya do tasme lekar, Aap Hazrat ﷺ ki khidmat mein haazir huwa, Aap Hazrat ﷺ ne farmaya, ki yeh Aag ka tasma hai ya do tasme hain.

(सहीह बुख़ारी : 6707)

जन्नत और जहन्नम का इल्म
सिर्फ़ वह्यी पर मबनी हक़ीक़त

عَنْ أُمِّ الْعَلَاءِ ، وَهِيَ امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، قَالَتْ : طَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الْأَنْصَارُ عَلَى سُكْنَى الْمُهَاجِرِينَ ، فَاشْتَكَى ، فَمَرَّضْنَاهُ حَتَّى تُوُفِّيَ ، ثُمَّ جَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ ، فَدَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَقُلْتُ : رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللَّهُ ، قَالَ وَمَا يُدْرِيكِ ؟ ، قُلْتُ : لَا أَدْرِي وَاللَّهِ ، قَالَ : أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ إِنِّي لَأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ مِنَ اللَّهِ ، وَاللَّهِ مَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ، قَالَتْ أُمُّ الْعَلَاءِ : فَوَاللَّهِ لَا أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ ، قَالَتْ : وَرَأَيْتُ لِعُثْمَانَ فِي النَّوْمِ عَيْنًا تَجْرِي ، فَجِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ ، فَقَالَ : ذَاكِ عَمَلُهُ يَجْرِي لَهُ.

हज़रत उम्मुल-अ़ला (रज़ि अल्लाहु अन्हा) ने बयान किया कि "मैंने रसूल अल्लाह: ﷺ से बैअ़त की थी. उन्होंने बयान किया कि जब अन्सार ने मुहाजिरीन के क़ियाम के लिए क़ुरा: अंदाज़ी की तो हज़रत उ़षमान बिन मज़ऊन का नाम हमारे यहाँ ठहरने के लिए निकला. फिर वह बीमार पड़ गए, हमने उनकी तीमारदारी की लेकिन उनकी वफ़ात हो गई. फिर हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया. इसके बाद आप ﷺ हमारे घर तशरीफ़ लाए तो मैंने कहा : अबू साइब! तुम पर अल्लाह: की रह़मत हो, मेरी गवाही है कि तुम्हें अल्लाह: तआ़ला ने इ़ज़्ज़त बख़्शी है. आप ﷺ ने फ़रमाया तुम्हें यह कैसे मअ़लूम हुआ? मैंने अ़र्ज़ की : अल्लाह: की क़सम मुझे मअ़लूम नहीं है. आप ﷺ ने इसके बाद फ़रमाया कि जहाँ तक उनका तअ़ल्लुक़ है तो यक़ीनी बात (मौत) उन तक पहुँच चुकी है और मैं अल्लाह: से उनके लिए ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अल्लाह: की क़सम मैं रसूल अल्लाह: हूँ और इसके बावजूद मुझे मअ़लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मआ़मला किया जाएगा. उम्मुल-अ़ला ने कहा कि वल्लाह:! इसके बाद मैं किसी इंसान की पाकी बयान नहीं करूँगी. उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत उ़षमान के लिए ख़्वाब में एक जारी चश्मा देखा था. चुनांचे मैंने ह़ाज़िर होकर आप ﷺ से इसका ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया कि यह उनका नेक अ़मल है, जिसका षवाब उनके लिए जारी है."

Hazrat Umm al-Ala (Razi Allah Anha) Ne Bayaan Kiya Ki "Maine Rasool Allah ﷺ se bai'at ki thi. Un'hone bayaan kiya ke jab Ansaar ne Muhajireen ke qiyaam ke liye qura-andaazi ki toh, Hazrat Usman bin Mazoon ka naam hamaare yahan thaher ne ke liye nikla. Phir wo Bimaar pad-gaye, Hamne unki Teemardaari ki lekin unki wafaat ho gayi. Phir hamne unhein unke kapdon mein lapet diya. Iske baad Aap ﷺ hamaare ghar tashreef laaye toh maine kaha: Abu Sa'ib! Tum par Allah ki rehmat ho, Meri gawaahi hai keh, Tumhein Allah ta'ala ne izzat bakhshi hai. Aap ﷺ ne farmaya: Tumhein yeh kaise maloom huwa? Maine arz ki: Allah ki qasam mujhe maloom nahi hai. Aap ﷺ ne iske baad farmaya keh, Jahan tak unka ta'alluq hai toh yaqeeni baat (maut) un tak Pahunch chuki hai, Aur main Allah se unke liye khair ki ummeed rakhta hun, Lekin Allah ki qasam main Rasool Allah hun aur iske bawajood mujhe maloom nahi keh, mere saath kya maamla kiya jaayega. Umm al-ala ne kaha keh, Wallah! Iske baad main kisi insaan ki paaki nahi bayaan karungi. Unhone bayaan kiya keh, Maine Hazrat Usman ke liye khwaab mein ek jaari chashma dekha tha. Chunanche maine haazir hokar Aap ﷺ se iska zikar kiya toh Aap ne farmaya keh yeh unka Nek amal hai, jiska sawaab unke liye jaari hai."

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 7018)

नबी ﷺ की वफ़ात के बाद वह्यी बंद फ़रिश्ते का आना भी बंद!

عَنْ أَنَسٍ قَالَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ بَعْدَ وَفَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعُمَرَ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى أُمِّ أَيْمَنَ نَزُورُهَا كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَزُورُهَا قَالَ فَلَمَّا انْتَهَيْنَا إِلَيْهَا بَكَتْ فَقَالَا لَهَا مَا يُبْكِيكِ فَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِرَسُولِهِ قَالَتْ إِنِّي لَأَعْلَمُ أَنَّ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِرَسُولِهِ وَلَكِنْ أَبْكِي أَنَّ الْوَحْيَ قَدْ انْقَطَعَ مِنَ السَّمَاءِ قَالَ فَهَيَّجَتْهُمَا عَلَى الْبُكَاءِ فَجَعَلَا يَبْكِيَانِ مَعَهَا

हज़रत अनस (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह: ﷺ के रिहलत (वफ़ात) फ़रमा जाने के बाद (एक बार) हज़रत अबू बक्र (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु अन्हु) से कहा : चलिए हज़रत उम्मे-ऐमन (रज़िअल्लाहु अन्हा) के यहाँ चलें और उनसे मुलाक़ात कर आएँ जिस त़रह़ रसूल अल्लाह: ﷺ उनसे मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले जाया करते थे. हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया : जब हम लोग उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो वह (रसूल अल्लाह: ﷺ को याद करके) अश्कबार हो गईं. दोनों हज़रात ने फ़रमाया : आप क्यों रो रही हैं? अल्लाह: के पास जो कुछ है वह उसके रसूल ﷺ के लिए (दुनिया की मताअ़ और आसाइशों से कहीं) बेहतर है. उम्मे-ऐमन (रज़ि अल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: यह तो मैं भी जानती हूँ कि अल्लाह: के पास जो कुछ है वह उसके रसूल ﷺ के लिए बेहतर है, लेकिन मैं तो इसलिए रोती हूँ कि (रसूल अल्लाह: ﷺ की वफ़ात से) आसमान से वह्यी आना बंद हो गई है. उनकी इस बात से हज़रत अबू बक्र और उ़मर (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) को भी रोना आ गया और वह भी रोने लगे.

Hazrat Anas (Razi Allahu Anhu) se riwayat hai ke Rasool Allah ﷺ ke Rehlat (Wafaat) farma jaane ke baad (ek baar) Hazrat Abu Bakr (Razi Allahu Anhu) ne Hazrat Umar (Razi Allahu Anhu) se kaha: Chaliye Hazrat Umm-e-Aiman (Razi Allaha Anha) ke Yaha chalein aur unse mulaqaat kar aayen jis tar'ah Rasool Allah ﷺ unse mulaqaat ke liye tashreef le-jaaya karte they. Hazrat Anas (Razi Allahu Anhu) ne farmaya: Jab ham log unki khidmat mein haazir huwe toh woh (Rasool Allah ﷺ ko yaad karke) ashk baar ho gayi. Dono hazraat ne farmaya: Aap kyun ro rahi hain? Allah ke paas jo kuch hai woh uske Rasool ﷺ ke liye (duniya ki mata aur aasaishon se kahin) behtar hai. Umm-e-Aiman (Razi Allahu Anha) ne farmaya: Yeh to main bhi jaanti hun keh, Allah ke paas jo kuch hai woh uske Rasool ﷺ ke liye behtar hai, Lekin main toh is liye roti hun ke (Rasool Allah ﷺ ki wafaat se) aasmaan se wahi aana band ho gayi hai. Unki is baat se Hazrat Abu Bakar aur Umar (Razi Allahu Anhuma) ko bhi rona aa gaya aur woh bhi rone lage.

(सुनन इब्ने माजा : 1635)

हज़रत उमर ﵁ को ज़िन्दगी भर का मलाल

قَالَ : خَطَبَ عُمَرُ عَلَى مِنْبَرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَقَالَ : إِنَّهُ قَدْ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ الْعِنَبِ ، وَالتَّمْرِ ، وَالْحِنْطَةِ ، وَالشَّعِيرِ ، وَالْعَسَلِ، وَالْخَمْرُ : مَا خَامَرَ الْعَقْلَ وَثَلَاثٌ ، وَدِدْتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، لَمْ يُفَارِقْنَا حَتَّى يَعْهَدَ إِلَيْنَا عَهْدًا الْجَدُّ وَالْكَلَالَةُ وَأَبْوَابٌ مِنْ أَبْوَابِ الرِّبَا

हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) ने रसूल अल्लाह: ﷺ के मिम्बर पर ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया :
जब शराब की हुरमत का हुक्म हुआ तो वो पाँच चीज़ों से बनती थी, अंगूर से, खजूर से, गेहूँ से, जौ से और शहद से. और "ख़म्र" (शराब) वो है, जो अक़्ल को मख़मूर कर दे. और तीन मसाइल ऐसे हैं कि मेरी तमन्ना थी कि रसूल अल्लाह: ﷺ हमसे जुदा होने से पहले हमें उनका हुक्म बता जाते, दादा का मसअला, कलाला का मसअला और सूद के चंद मसाइल.

Hazrat Umar (Razi Allahu Anhu) ne Rasool Allah ﷺ ke mimbar par khutba dete huwe farmaya:
Jab sharaab ki hurmat ka hukm huwa toh, woh paanch cheezon se banti thi, angoor se, Khajoor se, gehun se, Jo se aur shehad se. Aur "khamr" (sharaab) woh hai, Jo aqal ko makhmoor kar de. Aur teen masaail aise hain keh, meri tamanna thi keh, Rasool Allah ﷺ hamse juda hone se pehle hamein unka hukm bataa jaate: daada ka masla, kalalah ka masla aur sood ke chand-masaail.

(सहीह बुख़ारी: 5588)

वज़ाहत : हज़रत उमर को ज़िंदगी भर मलाल रहा कि तीन मसअले नहीं पूछ सका और आजकल के मौलवी साफ़ क़िस्से (कहानियाँ) सुनाते हैं कि हमारे पीरों से नबी की मुलाक़ात हुई, उनकी किताबों को नबी ने पसंद किया, उन्हें बशारतें दीं, जबकि हज़रत उमर ख़ुद फ़रमा रहे थे कि मैं तीन मसअले, काश हल करवा लेता. ये बाबाओं का दीन कुछ और है, किताबों का दीन कुछ और है. हमने क़िस्से (कहानियों) को दीन समझा, जबकि दीन क़ुरआन-ओ-सहीह अहादीष से समझना है.

जब अंम्बिया भी अल्लाह: के मोहताज तो बन्दे कैसे बन्दों के मददगार!

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ

मसीह़ इब्न मरयम सिवाय पैग़म्बर होने के और कुछ भी नहीं, उससे पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं. उनकी वालिदा एक स़िद्दीक़ा औ़रत थी, दोनों माँ-बेटा खाना खाया करते थे. आप देखिए कि किस त़रह़ हम उनके सामने दलीलें रखते हैं और फिर ग़ौर कीजिए कि किस त़रह़ वो फिरे जाते हैं.

Maseeh Ibn Maryam siwaaye paighambar hone ke aur kuch bhi nahi ussey pehle bhi bahot se paighambar ho chuke hain. Unki waalida ek Siddiqua aurat thi, Dono maa-beta khaana khaaya karte they. Aap dekhiye ke kis tar’ah ham unke saamne daleelein rakhte hain aur phir ghaur kijiye ke kis tarah wo phire jaate hain.

(सूर: माइदा: 5, आयत 75)

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

आप कह दीजिए कि तुम अल्लाह: के सिवा उनकी इबादत करते हो, जो न तुम्हारे किसी नुक़स़ान के मालिक हैं, न किसी नफ़ा के. अल्लाह: ही ख़ूब सुनने और पूरी त़रह़ जानने वाला है.

Aap keh dijiye keh, Tum Allah ke siwa unki ibaadat karte ho, Jo na-tumhaare kisi nuqsaan ke maalik hain, Na kisi faida ke. Allah hi khoob sunne aur poori tar’ah jaanne waala hai.

(सूर: माइदा: 5, आयत 76)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

ऐ लोगों! तुम अल्लाह: के मोह़ताज हो और अल्लाह: बे-नियाज़ और ख़ूबियों वाला है.

Aye logon! Tum Allah ke mohtaaj ho aur Allah be-niyaaz aur khoobiyon waala hai.

(सूर: फ़ात़िर 35, आयत 15)

क्या मुर्दों को ज़िंदा लोग सुना सकते हैं?

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ

बेशक आप न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं, जब कि वो पीठ फिरे रू-गर्दां जा रहे हों.

Beshak aap na-murdon ko suna sakte hain aur na-behron ko apni pukaar suna sakte hain, jabke wo peeth-phire roogardaan ja rahe ho.

(सूरह: नमल 27, आयत 80)

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ
وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ

और ज़िंदे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते. अल्लाह: तआला जिसको चाहता है सुना देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते, जो क़ब्रों में हैं.

Aur zinde aur murde baraabar nahi ho sakte. Allah ta'ala jisko chahta hai suna deta hai, aur aap un logon ko nahi suna sakte, jo qabron mein hain.

(सूर:फ़ातिर 35, आयत 22)

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ

बेशक आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हैं जब कि वो पीठ फेर कर मुड़ गए हों.

Beshak aap murdon ko nahi suna sakte aur na-behron ko apni awaaz suna sakte hain, Jab ke wo peeth pher-kar mudh-gaye ho.

(सूर: रूम 30, आयत 52)

अल्लाह: के अलावा कोई मददगार नहीं

وَ اللّٰهُ يَعۡلَمُ مَا تُسِرُّوۡنَ وَمَا تُعۡلِنُوۡنَ

और जो कुछ तुम छुपाओ और ज़ाहिर करो, अल्लाह: तआला सब कुछ जानता है

Aur jo kuch tum chupaao aur zaahir karo, Allah ta'ala sab kuch jaanta hai.

(सूर: नहल 16, आयत 19)

وَ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَا يَخۡلُقُوۡنَ شَيۡـئًا وَّهُمۡ يُخۡلَقُوۡنَ

"और जिन-जिन को ये लोग अल्लाह: तआला के सिवा पुकारते हैं, वो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वो ख़ुद पैदा किए हुए हैं.

Aur jin-jin ko yeh log Allah ta'ala ke siwa pukaarte hain, woh kisi cheez ko paida nahi kar sakte, Balke woh khud paida kiye huwe hain.

(सूर: नहल 16, आयत 20)

اَمۡوَاتٌ غَيۡرُ اَحۡيَآءٍ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ اَيَّانَ يُبۡعَثُوۡنَ

मुर्दे हैं, ज़िंदा: नहीं, उन्हें तो ये भी शऊर नहीं कि कब उठाए जाएँगे?

Murde hain, zinda nahi, unhein toh yeh bhi sha'oor nahi ke kab uthaaye jaayenge

(सूर: नहल 16, आयत 21)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ اِنَّ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَنۡ يَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا
وَّلَوِ اجۡتَمَعُوۡا لَهٗ وَاِنۡ يَّسۡلُبۡهُمُ الذُّبَابُ شَيۡـئًا لَّا يَسۡتَنۡقِذُوۡهُ مِنۡهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالۡمَطۡلُوۡبُ

लोगों! एक मिषाल बयान की जा रही है, ज़रा कान लगा कर सुन लो! अल्लाह: के सिवा जिन - जिन को तुम पुकारते रहे हो, वो एक मक्खी भी तो पैदा नहीं कर सकते चाहे सारे के सारे ही जमा हो जाएँ। बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ ले भागे तो, ये तो उसे भी उससे छीन नहीं सकते. बड़ा बौदा (कमज़ोर) है त़लब करने वाला और बड़ा बौदा (कमज़ोर) है, वो जिससे त़लब किया जा रहा है.

Logon! Ek misaal bayaan ki jaa'rahi hai, Zara kaan laga kar sunlo! Allah ke siwa jin jin ko tum Pukaarte rahe ho, Woh ek makkhi (bee) bhi to paida nahi kar sakte chaahe saare ke saare hi jamaa ho jaayein. Balki agar makkhi (bee) unse koi cheez le-bhaage toh, Yeh toh usey bhi ussey cheen nahi sakte. Badaa bodaa (Kamzoor) hai talab karne waala aur badaa bodaa (Kamzoor) hai, Wo jisse talab kiya jaa-raha hai.

(सूर: हज्ज 22, आयत 73)

Nabi ﷺ Ka Farman: Oonchi Qabron Ko Giraa Do, Dargah Darbaaron Ko Mitaa Do

حَدَّثَهُ وَفِي رِوَايَةِ هَارُونَ أَنَّ ثُمَامَةَ بْنَ شُفَيٍّ حَدَّثَهُ قَالَ كُنَّا مَعَ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ بِأَرْضِ الرُّومِ بِرُودِسَ فَتُوُفِّيَ صَاحِبٌ لَنَا
فَأَمَرَ فَضَالَةُ بْنُ عُبَيْدٍ بِقَبْرِهِ فَسُوِّيَ ثُمَّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَأْمُرُ بِتَسْوِيَتِهَا

सुमामा बिन शफ़ी ने बयान किया, कहा : हम रोम की सरज़मीन के रोड्स द्वीप में फ़ज़ाला बिन ज़ुबैद (ओसी, अंसारी) (रज़ियल्लाहु अन्हु) के साथ थे कि हमारा एक दोस्त वफ़ात (मृत्यु) पा गया. हज़रत फ़ज़ाला बिन ज़ुबैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उनकी क़ब्र के बारे में हुक्म दिया तो उसे बराबर कर दिया गया, फिर उन्होंने कहा : मैंने रसूल अल्लाह: ﷺ से सुना है कि आप इन (क़ब्रों) को ज़मीन के बराबर करने का हुक्म देते थे

Sumamah bin Shafi ne bayaan kiya, kaha: Ham sarzameen-e-Rome ke jazeera Rhodes mein Fazala bin Ubaid (Osi, Ansari) (Razi Allahu Anhu) ke saath they keh, Hamaara ek dost wafaat (death) paa-gaya. Hazrat Fazala bin Ubaid (Razi Allahu Anhu) ne unki qabar ke baare mein hukum diya toh usko baraabar kar diya gaya, Phir unhone kaha: Maine Rasool Allah ﷺ se suna hai keh, Aap in (qabron) ko (zameen ke) baraabar karne ka hukum dete they.

(स़ह़ीह़ मुस्लिम 2242)

عَنْ ثُمَامَةَ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدِ الْأَنْصَارِيِّ رضى الله عنه إِلَى أَرْضِ الرُّومِ، وَكَانَ عَامِلًا لِمُعَاوِيَةَ عَلَى الدَّرْبِ،
فَأُصِيبَ ابْنُ عَمٍّ لَنَا ، فَصَلَّى عَلَيْهِ فَضَالَةُ رضي الله عنه وَقَامَ عَلَى حُفْرَتِهِ، حَتَّي وَارَاهُ فَلَمَّا سَوَّيْنَا عَلَيْهِ حُفْرَتَهُ، قَالَ : أَخِفُّوا عَنْهُ
فَإِنَّ رَسُولَ الله صلى الله عليه و آله وسلم كَانَ يَأْمُرُنَا بِتَسْوِيَةِ الْقُبُورِ (مسند احمد: ۲۴۴۳۱)

सुमामा ह़मदानी कहते हैं: हम सैय्यदना फ़ज़ाला बिन ज़ुबैद अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के साथ रोम की ओर निकले, वह वहाँ सैय्यदना मुआविया: (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ओर से दरब के ह़ाकिम थे. हुआ यूँ कि हमारा एक चचेरा भाई वफ़ात (मृत्यु) हो गया. सैय्यदना फ़ज़ाला (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाई और उस वक्त तक उसकी क़ब्र पर खड़े रहे जब तक उसे दफ़न कर दिया गया. जब हमने (मिट्टी डालकर) उसका गड्ढा बराबर करना शुरू किया तो उन्होंने कहा ज़रा मिट्टी कम डालो, क्योंकि रसूल अल्लाह: ﷺ हमें क़ब्र को ज़मीन के बराबर करने का हुक्म दिया करते थे.

Sumamah Hamdani kehte hain: Ham Sayyidna Fazala bin Ubaid Ansari (Razi Allahu Anhu) ke humrah Rome ki taraf nikle, Woh wahan Sayyidna Muawiyah (Razi Allahu Anhu) ki taraf se darb ke haakim they, Huwa yun keh hamaara ek chacha zaath bhai faut (death) ho gaya, Sayyidna Fazala (Razi Allahu Anhu) ne uski Namaz-e-janaaza padhaayi aur us waqt tak uski Qabar par khade rahe yahan tak keh usko dafan kar diya, Jab hamne (mitti daal kar) uska gadha baraabar karne lage toh unhone kaha: Zara mitti kam-daalo, Kyun ke Rasool Allah ﷺ hamein Qabar ko zameen ke baraabar karne ka hukum diya karte they.

(मुसनद अह़मद: 24431)

नबी ﷺ का फ़रमान
क़ब्रों को ज़मीन के बराबर करो

(٣٢٧٠) (وَعَنْهُ مِنْ طَرِيْقٍ ثَانٍ) قَالَ: غَزَوْنَا أَرْضَ الرُّوْمِ وَعَلٰى ذَالِكَ الْجَيْشِ فَضَالَةُ بْنُ عُبَيْدٍ الْأَنْصَارِيُّ رضی اللہ عنہ فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ، فَقَالَ فَضَالَةُ: خَفِّفُوْا فَإِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم يَأْمُرُ بِتَسْوِيَةِ الْقُبُوْرِ۔ (مسند احمد: ٢٤٤٣٣)

षुमामा कहते हैं: हमने रोम के इलाक़े वालों से जिहाद किया, उस लश्कर के अमीर सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उबैद अंसारी (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) थे (दूसरी सनद)... सारा वाक़िआ बयान किया... सय्यिदुना फ़ज़ाला (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) ने कहा : मिट्टी थोड़ी डालो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह: ﷺ को यह हुक्म देते हुए सुना था कि क़ब्रों को ज़मीन के बराबर कर दिया जाए.

Sumamah kehte hain: Hamne Rome ke ilaaqe waalon se jihaad kiya, Is lashkar ke ameer Sayyidna Fazala bin Ubaid Ansari (Razi Allahu Anhu) they (Doosri Sanad),... Saara waaqia bayaan kiya..., Sayyidna Fazala (Razi Allahu Anhu) ne kaha: Mitti thodi daalo, Kyun ke maine Rasool Allah ﷺ ko yeh hukum dete huwe suna tha keh, Qabron ko zameen ke baraabar kar diya jaaye.

(मुस्नद अहमद: 24433)

(٣٢٧١) (وَمِنْ طَرِيْقٍ ثَالِثٍ) عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِيْ حَبِيْبٍ اَنَّ أَبَا عَلِيِّ الْهَمْدَانِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ رَاٰى فَضَالَةَ بْنَ عُبَيْدٍ رضی اللہ عنہ أَمَرَ بِقُبُوْرِ الْمُسْلِمِيْنَ فَسُوِّيَتْ بِأَرْضِ الرُّوْمِ وَقَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم يَقُوْلُ: سَوُّوْا قُبُوْرَكُمْ بِالْأَرْضِ۔

(مسند احمد: ٢٤٤٥٩)

(तीसरी सनद) अबू अली षुमामा हमदानी बयान करते हैं कि उन्होंने सैय्यदिना फ़ज़ाला बिन उ़बैद (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) को देखा कि वे मुसलमानों की क़ब्रों को ज़मीन के बराबर कर देने का हुक्म देते थे, चुनांचे रोम के इलाक़े में मुसलमानों की क़ब्रों को ज़मीन के बराबर कर दिया गया फिर उन्होंने कहा : मैंने रसूलुल्लाह: ﷺ को यह फ़रमाते सुना कि तुम अपनी क़ब्रों को ज़मीन के बराबर कर दिया करो.

(Teesri sanad) Abu Ali Sumamah Hamdani bayaan karte hain keh, Unhone Sayyidna Fazala bin Ubaid (Razi Allahu Anhu) ko dekha ke woh Musalmaano ki Qabron ko zameen ke baraabar kar dene ka hukum dete they, Chunanche Rome ke ilaaqe mein Musalmaano ki qabron ko zameen ke baraabar kar diya gaya. Phir unhone kaha: Main ne Rasool Allah ﷺ ko yeh farmate suna keh tum apni Qabron ko zameen ke baraabar kar diya karo.

(मुसनद अह़मद: 24459)

नबी ﷺ का फ़रमान
क़ब्रों को ज़मीन के बराबर करो

عَنْ أَبِي هَيَّاجٍ الْأَسَدِيِّ، قَالَ: بَعَثَنِي عَلِيٌّ، قَالَ لِي: أَبْعَثُكَ عَلَى مَا بَعَثَنِي عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ!
أَنْ لَا أَدَعَ قَبْرًا مُشْرِفًا إِلَّا سَوَّيْتُهُ، وَلَا تِمْثَالًا إِلَّا طَمَسْتُهُ.

हज़रत अबू हय्याज असदी से रिवायत है, वह कहते हैं कि हज़रत अली (रजि अल्लाहु अन्हु) ने मुझे भेजा और फ़रमाया: मैं तुम्हें उस काम पर भेज रहा हूँ, जिस पर रसूल अल्लाह: ﷺ ने मुझे भेजा था कि, किसी ऊँची क़ब्र को न छोड़ूँ मगर उसे बराबर कर दूँ और न किसी मूर्ति को मगर उसे मिटा डालूँ.

Hazrat Abu Hayyaj Asadi se riwayat hai, woh kehte hain ke Hazrat Ali (Razi Allahu Anhu) ne mujhe bheja aur farmaya: Main tumhein is kaam par bhej raha hun, Jis par Rasool Allah ﷺ ne mujhe bheja tha keh, kisi oonchi Qabar ko na chhordo magar usey baraabar kar dun aur na kisi moorti ko magar usey mita daalun.

(सुनन अबू दाऊद : 3218)

أَنَّ أَبَا عَلِيٍّ الْهَمْدَانِيَّ حَدَّثَهُ، قَالَ: كُنَّا مَعَ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ بِرُودِسَ مِنْ أَرْضِ الرُّومِ، فَتُوُفِّيَ صَاحِبٌ لَنَا،
فَأَمَرَ فَضَالَةُ بِقَبْرِهِ فَسُوِّيَ، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ بِتَسْوِيَتِهَا، قَالَ أَبُو دَاوُد:
رُودِسُ جَزِيرَةٌ فِي الْبَحْرِ.

अबू अ़ली ह़मदानी ने बयान किया कि हम ह़ज़रत फ़ज़ाला बिन उ़बैद (रजिअल्लाहु अन्हु) की मौजूदगी में थे, रूम की सरज़मीं में जज़ीरा:-ए-रोड्स में थे कि हमारा एक साथी वफ़ात (मृत्यु) पा गया.ह़ज़रत फ़ज़ाला ने उनकी क़ब्र के बारे में कहा कि उसे बराबर कर दिया जाए, फिर फ़रमाया: मैंने रसूल अल्लाह: ﷺ को सुना कि आप क़ब्र को बराबर करने का हुक्म देते थे. इमाम अबू दाऊद (रहमतुल्लाह: अ़लैह) ने कहा कि रोड्स एक समुद्री जज़ीरे का नाम है।

Abu Ali Hamdani ne bayaan kiya ke ham Hazrat Fazala bin Ubaid (Razi Allahu Anhu) ki maiyyat mein they, Rome ki sar-zameen mein jazeera-e-Rhodes mein they ke, hamaara ek saathi wafaat (death) pa gaya. Hazrat Fazala ne unki Qabar ke mutaliq kaha ke, usey baraabar kar-diya jaaye, Phir farmaya: Main ne Rasool Allah ﷺ ko suna keh, Aap Qabar ko baraabar karne ka hukum dete they. Imam Abu Dawood (R.A) ne kaha ke Rhodes ek samandari jazeera ka naam hai.

(सुनन अबू दाऊद: 3219)

क्या क़ब्र भी बुत है?

وَعَن عَطاءِ بنِ يَسَارٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسلم:

«اللَّهُمَّ لَا تجعَل قَبْرِي وثنا يعبد اشْتَدَّ غَضَبُ اللّٰهِ عَلَى قَوْمٍ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائهِمْ مَسَاجِد»

हजरत अता बिन यासार (रजिअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं, रसूल अल्लाह: ﷺ ने फरमाया: "ऐ अल्लाह:! मेरी कब्र को बुत (मक़बरा) न बनाना कि इसकी पूजा की जाए, अल्लाह: उन लोगों पर सख्त नाराज़ हो, जिन्होंने अम्बिया (अलैहिस्सलाम) की कब्रों को सजदा-गाह बना लिया."

Hazrat Ata bin Yasar (Razi Allahu Anhu) bayaan karte hain, Rasool Allah ﷺ ne farmaya: Aye Allah! Meri Qabar ko butt (magbara) na banaana keh iski pooja ki jaaye Allah un logon par sakht naraaz ho, Jinhone Ambiya (Alaihissalam) ki Qabron ko sajda-gah banaa-liya.

(Musnad Ahmed : 21184, Ibne Maaja 1560)

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا , قَالَتْ : قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ : "

لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ

हज़रत आयशा (रजि अल्लाहु अन्हा) से रिवायत है कि नबी-ए-करीम रसूल अल्लाह: ﷺ ने अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर फ़रमाया था, जिस से आप सेहतयाब न हो सके थे कि, अल्लाह: तआ़ाला की लअ़नत हो यहूद और नसारा पर. उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया. अगर यह डर न होता तो आप की क़ब्र भी खुली रहने दी जाती. लेकिन डर इस बात का है कि, कहीं इसे भी लोग सजदा: -गाह न बना लें.

Ayesha (Razi Allahu Anha) ne kaha, Nabi-e-Kareem ﷺ ne apne is marz ke mauqe par farmaya tha, Jisse aap jaan'bar na ho sake they keh, Allah ta'ala ki laanat ho yahood-o-nasaara par. Unhone apne ambiyaa ki Qabron ko masajid banaa-liya. Agar yeh darr na hota toh, Aap ki Qabar bhi khuli rehne di jaati. Lekin darr is baat ka hai ke kahin isey bhi log sajda-gah na banaa lein."

(सहीह बुखारी: 1390)

क़ब्रों को सजदा: करना **हराम** है.	(सहीह बुखारी: 1330)
क़ब्रों को पक्का बनाना **हराम** है.	(सहीह मुस्लिम : 2245)
क़ब्रों पर दिए जलाना **हराम** है.	(सुनन नसाई: 2045, 2046, 2047)
क़ब्रों पर लिखना **हराम** है.	(अबू दाऊद : 3226)
क़ब्रों पर (मज़ावर बनकर) बैठना हराम है.	(सहीह मुस्लिम : 2248, 2249, 2250)
क़ब्रों पर उर्स मेले लगाना **हराम** है.	(अबू दाऊद : 2042)

नबी ﷺ की गवाही मैं हाज़िर नाज़िर नहीं हूँ.

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا ثُمَّ قَرَأَ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ سورة الأنبياء آية 104 فَأَوَّلُ مَنْ يُكْسَى إِبْرَاهِيمُ ثُمَّ يُؤْخَذُ بِرِجَالٍ مِنْ أَصْحَابِي ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ أَصْحَابِي ، فَيُقَالُ : إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ ، فَأَقُولُ : كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ { 117 } إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ { 118 } سورة المائدة آية 117-118 ، قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفَرَبْرِيُّ ذُكِرَ عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ عَنْ قَبِيصَةَ قَالَ هُمُ الْمُرْتَدُّونَ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ فَقَاتَلَهُمْ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ .

रसूल अल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया : "(क़यामत के दिन) तुम लोग नंगे-पाँव, नंगे-बदन और बग़ैर ख़तना के उठाए जाओगे" फिर आप ने इस आयत की तिलावत की "जिस तरह हमने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया था, उसी तरह हम दुबारा लौटाएँगे, यह हमारी जानिब से वादा: है और बेशक हम इसे करने वाले हैं." फिर सबसे पहले ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को कपड़ा (ड्रेस) पहनाया जाएगा. फिर मेरे अस़ह़ाब को दायें (जन्नत की) त़रफ़ ले-जाया जाएगा. लेकिन कुछ को बायें (जहन्नम की) त़रफ़ ले-जाया जाएगा. मैं कहूँगा कि ये तो मेरे अस़ह़ाब हैं लेकिन मुझे बताया जाएगा कि जब आप उनसे जुदा हुए तो उसी वक़्त उन्होंने इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया था. मैं उस वक़्त वही कहूँगा जो अ़ब्द-ए-स़ालिह़ ई़सा इब्न-ए-मरयम (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा था कि जब तक मैं उन में मौजूद था उनकी निगरानी करता रहा लेकिन जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका निगहबान है और तू हर-चीज़ पर निगहबान है. (आयत अल अज़ीज़ अल ह़कीम तक) मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया कि अबू अ़ब्दुल्लाह: से रिवायत है और उनसे क़बीसा ने बयान किया कि ये वो मुर्तदीन हैं जिन्होंने ह़ज़रत अबू बक्र (रज़िअल्लाहु अन्हु) के अ़हद-ए-ख़िलाफ़त में कुफ़्र इख़्तियार किया था और जिनसे अबू बक्र (रज़ि अल्लाहु अन्हु) ने जंग की थी.

Ibn Abbas (Razi Allahu Anhuma) Farmate Hai, Rasool Allah ﷺ ne farmaya: (Qayamat ke din) tum log nange-paon, Nange-badan aur Baghair khatna ke uthaaye jaaoge. "Phir aap ne is aayat ki tilaawat ki "Jis tar'ah hamne unhein Pehli martaba paida kiya tha, Usi tar'ah ham dubaara lautayenge, Yeh hamaari jaanib se waada hai aur beshak ham isey karne waale hain."Phir sab se pehle Hazrat Ibraheem (Alaihissalam) ko kapda (dress) pehnaaya jaayega. Phir mere As'haab ko daayein (jannat ki) taraf le-jaaya jaayega. Lekin kuch ko baayein (jahannum ki) taraf le-jaaya jaayega. Main kahunga ke yeh to mere As'haab hain, Lekin mujhe bataaya jaayega keh, Jab aap unse Juda huwe toh usi waqt unhone irtidaad ikhtiyaar kar liya tha. Main us waqt wahi kahunga jo Abd-e-Saalih Isa Ibn-e-Maryam (Alaihissalam) ne kaha tha keh, Jab tak main un mein maujood tha unki Nigraani karta raha, Lekin jab tune mujhe uthaaliya toh tu hi unka nigehbaan hai, Aur tu har-cheez par nigehbaan hai. (Aayat al Azeez al Hakeem tak) Muhammad bin Yousuf ne bayaan kiya keh, Abu Abdullah se riwaayat hai aur unsey Qabeesa ne bayaan kiya keh Yeh woh murtadeen hain jinhone Hazrat Abu Bakr (Razi Allahu Anhu) ke ahad-e-khilaafat mein kufr ikhtiyaar kiya tha aur jinse Abu Bakr (Razi Allahu Anhu) ne jung ki thi.

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 3447)

ग़ैब का इल्म अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ
لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوْٓءُ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ

आप फ़रमा दीजिए कि, मैं ख़ुद अपनी ज़ात-ए-ख़ास के लिये किसी नफ़अ का इख़्तियार नहीं रखता और न किसी नुकसान का, मगर इतना ही कि जितना अल्लाह: ने चाहा हो. और अगर मैं ग़ैब की बातें जान लेता तो मैं बहुत से मुनाफ़े हासिल कर लेता और कोई नुक़सान मुझ को न पहुँचता. मैं तो महज़ डराने वाला और बशारत देने वाला हूँ, उन लोगों को जो ईमान रखते हैं.

Aap farma dijiye keh, Main khud apni zaat khaas ke liye kisi nafaa ka ikhtiyaar nahi rakhta aur na kisi zarar ka, Magar itna hi ke jitna Allah ne chaaha ho. Aur agar main ghaib ki baatein jaan-leta toh, Main bahot se manaafe (faide) haasil kar-leta aur koi nuqsaan mujh ko na-pahunchta. Main toh mahez daraane waala aur bashaarat dene waala hun, Un logon ko jo eemaan rakhte hain.

(सूर: अअ़राफ़ 7 : आयत 188)

عن ابن عمر ـ رضى الله عنهما ـ عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مفاتيح الغيب خمس لا يعلمها إلا الله ، لا يعلم ما تغيض الأرحام إلا الله ، ولا يعلم ما فى غد إلا الله ، ولا يعلم متي يأتي المطر أحد إلا الله ، ولا تدري نفس بأى أرض تموت إلا الله ، ولا يعلم متي تقوم الساعة إلا الله

इब्न-ए-उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया। नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया :
ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह: के सिवा और कोई नहीं जानता: अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता कि रह़म-ए-मादर (गर्भ) में क्या है.? अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा.? अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता कि बारिश कब आएगी.? अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता कि किस जगह कोई मरेगा.? और अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी.

Ibn Umar (Razi Allahu Anhu) Ne Farmaya, Nabi-e-Kareem ﷺ ne farmaya:
Ghaib ki paanch kunjiyan hain, Jinhein Allah ke siwa aur koi nahi jaanta, Allah ke siwa aur koi nahi jaanta ke reham-e-madar mein kya hai, Allah ke siwa aur koi nahi jaanta keh kal kya hoga, Allah ke siwa aur koi nahi jaanta keh baarish kab aayegi, Allah ke siwa aur koi nahi jaanta keh,Kis jagah koi marega, aur Allah ke siwa koi nahi jaanta ke qayamat kab qaayam hogi.

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 7379)

ग़ैब का इ़ल्म अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ
اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ

और अल्लाह: तअ़ाला ही के पास हैं, ग़ैब की कुंजियाँ (ख़ज़ाने), उनको कोई नहीं जानता बजुज़ अल्लाह: तअ़ाला के। और वह तमाम चीज़ों को जानता है, जो कुछ ख़ुश्क़ी (ड्राइ) में है और जो कुछ दरियाओं में है। और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसको भी जानता है, और कोई दाना ज़मीन के तारीक हिस़्सों में नहीं पड़ता, और न कोई तर और न कोई ख़ुश्क़ (ड्राइ) चीज़ गिरती है मगर यह सब किताब-ए-मुबीन में हैं।

Aur Allah ta'ala hi ke paas hain, Ghaib ki kunjiyan (khazaane), Unko koi nahi jaanta bajuz Allah ta'ala keh. Aur wo tamaam cheezon ko jaanta hai, Jo kuch khushki (dry) mein hai aur jo kuch daariyaon mein hai. Aur koi patta nahi girta magar wo usko bhi jaanta hai aur koi daana zameen ke tareek hisson mein nahi padta, aur na koi tar aur na koi khushk (dry) cheez girti hai magar yeh sab kitaab-e-mubeen mein hain.

(सूर: अनआम 6, आयत 59)

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ
فَانْتَظِرُوْا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ

और यह लोग यों कहते हैं कि, उन पर उनके रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं नाज़िल होती? सो आप फ़रमा दीजिए कि, ग़ैब की ख़बर स़िर्फ़ अल्लाह: को है, सो तुम भी मुन्तज़िर रहो, मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ। (सूर: यूनूस 10, आयत 20)

Aur yeh log yun kehte hain keh, Un par unke Rabb ki taraf se koi nishaani kyun nahi naazil hoti? So aap farma dijiye ke, Ghaib ki khabar sirf Allah ko hai, So tum bhi muntazir raho, Main bhi tumhaare saath muntazir hun. (Surah yunus 10, Aayat 20)

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ

कह दीजिए कि, आसमान वालों में से, ज़मीन वालों में से, सिवाए अल्लाह: के कोई ग़ैब नहीं जानता। उन्हें तो यह भी मअ़लूम नहीं कि कब उठाकर खड़े किए जाएंगे। (सूर: नमल 27, आयत 65)

Keh dijiye ke, Aasman waalon mein se zameen waalon mein se siwaaye Allah ke koi ghaib nahi jaanta. Unhein toh yeh bhi nahi maloom ke kab uthaa khade kiye jaayenge.

(Surah Namal 27, Aayat 65)

ग़ैब का इ़ल्म अल्लाह: के सिवा कोई नहीं जानता

قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنۡ كَانَ يَرۡجُوۡا
لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا

आप कह दीजिए कि, मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूँ (हाँ) मेरी त़रफ़ वह़्यी की जाती है कि, सबका मअ़बूद स़िर्फ़ एक ही मअ़बूद है। सो जिसे भी अपने परवरदिगार से मिलने की आरज़ू हो, उसे चाहिए कि नेक अ़आमाल करे और परवरदिगार की इ़बादत में किसी को भी शरीक न करे।

Aap keh dijiye keh, Main to tum jaisa hi ek insaan hun (haan) meri taraf wahi ki jaati hai ke, Sabka maa'bood sirf ek hi maa'bood hai. So jise bhi apne Parwardigaar se milne ki aarzoo ho, Usey chaahiye keh, Nek aamaal kare aur apne Parwardigaar ki ibaadat mein kisi ko bhi shareek na-kare.

(सूर: कहफ़ 18, आयत 110)

اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ غَيۡبَ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اللّٰهُ بَصِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

यक़ीन मानो कि, आसमानों और ज़मीन की पोशीदा (छुपी हुई) बातें अल्लाह: ख़ूब जानता है और जो कुछ तुम कर रहे हो, उसे अल्लाह: ख़ूब देख रहा है।

Yaqeen maano keh, aasmaano aur zameen ki poshida (chupi huwi) baatein Allah khoob jaanta hai aur jo kuch tum kar-rahe ho usey Allah khoob dekh raha hai.

(सूर: हुजुरात 49, आयत 18)

اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ
دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ

क्या तुझे इल्म नहीं कि, ज़मीन और आसमान का मुल्क अल्लाह: ही के लिए है और अल्लाह: के सिवा तुम्हारा कोई वली और मददगार नहीं।

Kya tujhe ilm nahi keh, Zameen aur aasmaan ka mulk Allah hi ke liye hai aur Allah ke siwa tumhaara koi wali aur madadgaar nahi.

(सूर: बक़रा: 2, आयत 107)

अम्मा आइशा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) का फ़रमान "जिसने ये बात कही वो झूठा है”

عن مسروق ، قال قلت لعائشة ـ رضى الله عنها ـ يا أمتاه هل رأى محمد صلى الله عليه وسلم ربه فقالت لقد قف شعري مما قلت ، أين أنت من ثلاث من حدثكهن فقد كذب ، من حدثك أن محمدا صلى الله عليه وسلم رأى ربه فقد كذب. ثم قرأت { لا تدركه الأبصار وهو يدرك الأبصار وهو اللطيف الخبير } { وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب } ومن حدثك أنه يعلم ما في غد فقد كذب ثم قرأت { وما تدري نفس ماذا تكسب غدا } ومن حدثك أنه كتم فقد كذب ثم قرأت { يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك } الآية ، ولكنه رأى جبريل ـ عليه السلام ـ في صورته مرتين.

मस्रूक ने बयान किया कि, "मैंने आइशा (रज़ि अल्लाह: अन्हा) से पूछा: ऐ ईमान वालों की माँ! क्या मुहम्मद ﷺ ने मेअ़राज की रात में अपने रब को देखा था?आइशा (रज़ि अल्लाह अन्हा) ने कहा : तुमने ऐसी बात कही कि मेरे रोंगटे खड़े हो गये। क्या तुम इन तीन बातों से भी नावाक़िफ़ हो?जो शख़्स भी तुम में से ये तीन बातें बयान करे, वो झूठा है: जो शख़्स ये कहे कि मुहम्मद ﷺ ने शब-ए-मेअ़राज में अपने रब को देखा था, वो झूठा है। फिर उन्होंने इन आयात की तिलावत की: "ला तुद्रिकुहु अल-अबस़ार, वहो युद्रिकुल-अबस़ार, वहो अल-लतीफ़ुल-ख़बीर..से लेकर वमा काना लिबशर अन यु'कलिमहुल्लाहू इल्ला वह्यन औ मिन वराई हि़जाब" तक तिलावत की और कहा के किसी इन्सान के लिये मुमकिन नहीं है कि अल्लाह: से बात करे सिवा इसके कि वह्यी के ज़रिए हो या फिर पर्दे के पीछे हो और जो शख़्स तुम से कहेकि नबी करीम ﷺ आने वाले कल की बात जानते थे, वो भी झूठा है। इसके लिये उन्होंने आयत की तिलावत की: "वमा तद्री नफ़्सुन माज़ा तक्सिबु ग़दन" – यअ़नि कोई शख़्स नहीं जानता कि कल क्या करेगा। और जो शख़्स ये कहे कि नबी करीम ﷺ ने तब्लिग़-ए-दीन (दीन का पहुँचाना) में कोई बात छुपाई थी, वो भी झूठा है।इसके लिये उन्होंने आयत की तिलावत की : "या अय्युहर-रसूलु बल्लिग़ मा उन्जिला इलैका मिन रब्बिक"- यअ़नि ऐ रसूल! पहुँचा दो वो सब कुछ जो तुम्हारे रब की तऱफ़ से तुम पर उतारा गया है। हाँ - नबी करीम ﷺ ने जिब्रील (अ़लैहि सलाम) को उनकी अस़ल स़ूरत में दो मरतबा देखा था।

Masrooq ne Bayaan Kiya ki,“Maine Aisha (Razi Allah Anha) se poocha: Aye eemaan waalon ki maa! Kya Muhammad ﷺ ne meraaj ki raat mein apne Rabb ko dekha tha? Aisha (Razi Allah Anha) ne kaha tumne aisi baat kahi keh, Mere rongte-khade ho gaye. Kya tum in teen baaton se bhi nawaqif ho? Jo shakhs bhi tum mein se yeh teen baatein bayaan kare, Wo jhoota hai. Jo shakhs yeh kehta ho ke Muhammad ﷺ ne Shab-e-Meraaj mein apne Rabb ko dekha tha, Wo jhoota hai. Phir unhone aayat ‘La tudrikuhu al-absaar wa huwa yudriku al-absaar wa huwa al-latifu al-khabir’ se le kar ‘min wara’i hijab’ tak ki tilaawat ki aur kaha ke kisi insaan ke liye mumkin nahi ke Allah se baat kare, Siwaaye iske keh wahi ke zariye ho ya phir parde ke peeche se ho. Aur jo shakhs tum se kahe ke Nabi-e-Kareem ﷺ aane waale kal ki baat jaante they woh bhi jhoota hai. Iske liye unhone aayat ‘Wa ma tadri nafsun mazaa taksibu ghada’ yaani ‘aur koi shakhs nahi jaanta ke kal kya karega’ ki tilaawat farmayi. Aur jo shakhs tum mein se kahe keh, Nabi Kareem ﷺ ne tableegh-e-deen mein koi baat chupaayi thi, Wo bhi jhoota hai. Phir unhone yeh aayat tilaawat ki ‘Ya ayyuhar rasoolu balligh ma unzila ilaika min rabbik’ yaani ‘Aye Rasool! Pahunchaa dijiye wo sab kuch jo aapke Rabb ki taraf se aap par utaara gaya hai. Haan, Nabi-e-Kareem ﷺ ne Jibraeel (Alaihissalam) ko unki asal soorat mein do martaba dekha tha.

(स़हीह़ बुख़ारी : 4855)

नबी ﷺ का दीदार क़ब्रों में नहीं होता!

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ، أَنَّ أَسْوَدَ رَجُلًا أَوِ امْرَأَةً , كَانَ يَقُمُّ الْمَسْجِدَ فَمَاتَ , وَلَمْ يَعْلَمِ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَوْتِهِ فَذَكَرَهُ ذَاتَ يَوْمٍ , فَقَالَ : مَا فَعَلَ ذَلِكَ الْإِنْسَانُ ؟ قَالُوا : مَاتَ يَا رَسُولَ اللهِ ، قَالَ : أَفَلَا آذَنْتُمُونِي ، فَقَالُوا : إِنَّهُ كَانَ كَذَا وَكَذَا قِصَّتُهُ ، قَالَ : فَحَقَرُوا شَأْنَهُ قَالَ فَدُلُّونِي عَلَى قَبْرِهِ فَأَتَى قَبْرَهُ فَصَلَّى عَلَيْهِ.

अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया है। काले रंग का एक मर्द या एक काली ओ़रत मस्जिद की ख़िदमत किया करता था/करती थी। उनकी वफ़ात हो गयी लेकिन नबी-ए-करीम ﷺ को उनकी वफ़ात की ख़बर किसी ने नहीं दी। एक दिन आपने ख़ुद याद फ़रमाया कि वह शख़्स दिखाई नहीं देता। स़ह़ाबा किराम ने कहा: या रसूलल्लाह: ﷺ! उनका तो इन्तेक़ाल हो गया। आप ﷺ ने फ़रमाया : फिर तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं दी? स़ह़ाबा किराम ने अर्ज़ की : ये वजुहात थीं (इस लिये आपको तकलीफ़ नहीं दी गयी)। ग़ोया लोगों ने उनको ह़क़ीर जानकर क़ाबिल-ए-तवज्जो नहीं समझा। लेकिन आप ﷺ ने फ़रमाया: चलो, मुझे उनकी क़ब्र बता दो। चुनांचे आप ﷺ उनकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाये और उस पर नमाज़-ए-जनाज़ा अदा फ़रमाई।

Abu Huraira (Razi Allahu Anhu) Ne Farmaya hai, Kale rang ka ek mard ya ek kali aurat masjid ki khidmat kiya karti thi, Unki wafaat (death) ho gayi lekin Nabi-e-Kareem ﷺ ko unki wafaat (death) ki khabar kisi ne nahi di. Ek din aap ne khud yaad farmaya keh, Woh shakhs dikhaayi nahi deta. Sahaba kiraam ne kaha keh, ya Rasool Allah ﷺ! Unka to inteqaal ho gaya. Aap ﷺ ne farmaya keh, Phir tum ne mujhe khabar kyun nahi di? Sahaba kiraam ne arz ki ke yeh wajoohat thi (is liye aap ko takleef nahi di gayi). Goya logon ne unko haqeer jaan kar Qabil-e-tawajjo nahi samjha, Lekin Aap ﷺ ne farmaya keh, chalo mujhe unki qabar bataa do. Chunanche Aap ﷺ unki qabar par tashreef laaye aur uspar Namaaz-e-janaaza padhi.

(स़ह़ीह़ बुख़ारी: 1337)

वज़ाहत: इस ह़दीष से दो अह़म बातें षाबित होती हैं : 1) अम्बिया इल्म-ए-ग़ैब नहीं रखते। अल्लाह के रसूल ﷺ को उस शख़्स के इन्तेक़ाल की ख़बर नहीं हुई। यह षुबूत है कि अम्बिया स़िर्फ़ वही इ़ल्म रखते हैं, जो अल्लाह: उन्हें अ़ता करे। इ़ल्म-ए-ग़ैब स़िर्फ़ अल्लाह: के पास है। 2) कुछ लोगों का यह मानना ग़लत़ षाबित होता है कि अल्लाह: के नबी क़ब्रों में आते हैं।क्योंकि इस ह़दीष से षाबित है कि उस आदमी की वफ़ात की ख़बर नबी ﷺ को मअ़लूम नहीं थी। अगर नबी ﷺ क़ब्र में आते तो स़ह़ाबा से यह न पूछते कि वह शख़्स कहाँ है।

मक्का के मुश्रिकों का अ़मल और आज के मुश्रिकों की मुशाबिहृत!

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ، قال : إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا قَدِمَ أَبَى أَنْ يَدْخُلَ الْبَيْتَ وَفِيهِ الْآلِهَةُ فَأَمَرَ بِهَا فَأُخْرِجَتْ فَأَخْرَجُوا صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ فِي أَيْدِيهِمَا الْأَزْلَامُ ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : قَاتَلَهُمُ اللهُ أَمَا وَاللهِ لَقَدْ عَلِمُوا أَنَّهُمَا لَمْ يَسْتَقْسِمَا بِهَا قَطُّ ، فَدَخَلَ البيت فَكَبَّرَ فِي نَوَاحِيهِ وَلَمْ يُصَلِّ فِيهِ .

रसूल अल्लाह: ﷺ जब (फ़तह मक्का: के दिन) तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने काबा (कअ़बा)के अंदर जाने से इस लिए इन्कार फ़रमाया के, इस में बुत (मक़बरा) रखे हुवे थे। फिर आप ﷺ ने हुक्म दिया और वो निकाले गए, लोगों ने इब्राहिम (अ़लैहिस्सलाम) और इस्माईल (अ़लैहिस्सलाम) के बुत (मक़बरा) भी निकाले। उनके हाथों में फ़ाल निकालने की तीर दे-रखे थी। रसूल अल्लाह ﷺ ने फरमाया: अल्लाह: इन मुश्रिकों को ग़ारत करे, अल्लाह: की क़सम उन्हें अच्छी तौ़र पर मअ़लूम था के, इन बुजुर्गों ने तीर से फ़ाल कभी नहीं निकाली। इसके बाद आप ﷺ काबा के अंदर तशरीफ ले-गए और चारों तऱफ़ तकबीर कही। आप ﷺ ने अन्दर नमाज़ नहीं पढ़ी।

Rasool Allah ﷺ jab (Fateh Makkah ke din) tashreef laaye toh Aap ﷺ ne Kaaba ke andar jaane se is liye inkaar farmaya keh, is mein butt (magbara) rakhe huwe they. Phir Aap ﷺ ne hukm diya aur wo nikaale gaye, Logon ne Ibraheem (Alaihissalam) aur Ismail (Alaihissalam) ke butt (magbara) bhi nikaale. Unke haaton mein faal nikaalne ki teer de-rakhe thi. Rasool Allah ﷺ ne farmaya: Allah in mushrikon ko ghaarath kare, Allah ki qasam unhein achchi tar'ah maloom tha keh, in buzurgon ne teer se faal kabhi nahi nikaali. Iske baad Aap ﷺ Kaaba ke andar tashreef le-gaye aur chaaron taraf takbeer kahi. Aap ﷺ ne andar namaaz nahi padhi.

(सहीह बुखारी : 1601)

वज़ाहत : **जो लोग यह समझते हैं कि, बुतों (मक़बरा) वाली आयत हमारे पीर और बुजुर्गों के ऊपर चस्पा करते हैं, ज़रा उन्हें यह सोचना चाहिए कि, जो नबी न ﷺ ने इब्राहिम (अ़लैहिस्सलाम) के बुत (मगबरा) निकाले तो सवाल यह है कि, "क्या इब्राहिम (अ़लैहिस्सलाम) और इस्माइल (अलैहिस्सलाम) बुत थे?। पेज नं. 13 पर आप देख सकते हैं. (सूर: माइदा: आयत. 75, 76)। अल्लाह: ने ईसा (अ़लैहिस्सलाम) और मरयम (अ़लैहिस्सलाम) के बारे कहा लोगों ने इनको मअ़बूद बना-लिया, क्या यह बुत हैं?**

अल्लाह: का ऐ़लान नबी की वफ़ात ह़क़ है!

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ اِنَّهُمۡ مَّيِّتُوۡنَ ﴿۳۰﴾
ثُمَّ اِنَّكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ عِنۡدَ رَبِّكُمۡ تَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿۳۱﴾

यक़ीनन ख़ुद आप को भी मौत आएगी और यह सब भी मरने वाले हैं। फिर तुम सबके सब क़यामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।

Yaqeenan khud aap ko bhi maut aayegi aur yeh sab bhi marne waale hain. Phir tum sabke sab Qayaamat ke din apne Rabb ke saamne jhag'doge.

(सूर: जुमर 39, आयत 30-31)

وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ اَفَا۟ئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ﴿۳۴﴾
كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ وَنَبۡلُوۡكُمۡ بِالشَّرِّ وَالۡخَيۡرِ فِتۡنَةً وَاِلَيۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۳۵﴾

आप से पहले किसी इंसान को भी हमने हमेशगी नहीं दी। क्या अगर आप मर-गए तो वो हमेशा के लिए रह जाएंगे? हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है। हम बत़ौर इम्तिह़ान तुम में से हर एक को बुराई और भलाई में मुब्तला करते हैं और तुम सब हमारी ही तरफ़ लौटाए जाओगे।

Aap se pehle kisi insaan ko bhi hamne hameshgi nahi di. Kya agar aap mar-gaye toh woh hamesha ke liye reh jaayenge? Har jaandaar maut ka mazaa chakhne waala hai. Ham bataariq imtihaan tum mein se har ek ko buraayi aur bhalaayi mein mubtala karte hain aur tum sab hamaari hi taraf lautaaye jaaoge.

(सूर: अंम्बिया 21, आयत 34-35)

फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की गवाही नबी ﷺ इंतक़ाल कर गए!

قَالَ : لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَتَغَشَّاهُ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامِ : وَا كَرْبَ أَبَاهُ ، فَقَالَ لَهَا : لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ الْيَوْمِ ، فَلَمَّا مَاتَ ، قَالَتْ : يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ ، فَلَمَّا دُفِنَ قَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامِ : يَا أَنَسُ أَطَابَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّرَابَ ؟ .

अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: शिद्दत-ए-मर्ज़ के ज़माने में नबी-ए-करीम ﷺ की बेचैनी बहुत बढ़ गई थी। फ़ातिमा -तुज़-ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: "आह, अब्बा-जान को कितनी बेचैनी है।" हुज़ूर ﷺ ने इस पर फ़रमाया: "आज के बाद तुम्हारे अब्बा-जान की यह बेचैनी नहीं रहेगी।" फिर जब आप ﷺ की वफ़ात हो गई, तो फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती थीं : "हाय अब्बा-जान! आप अपने रब के बुलावे पर चले गए। हाय अब्बा-जान! आप जन्नत-उल-फ़िरदौस में अपने मकाम पर चले गए। हम जिब्रील (अ़लैहिस्सलाम) को आप ﷺ की वफ़ात की ख़बर सुनाते हैं।" फिर जब आप ﷺ को दफ़न कर दिया गया, तो फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: "ऐ अनस! तुम्हारे दिल रसूलुल्लाह: ﷺ की लाश पर मिट्टी डालने के लिए कैसे आमादा हो गए थे?

Anas Bin Malik (Razi Allahu Anhu) Ne Kaha, Shiddat marz ke zamaane mein Nabi-e-Kareem ﷺ ki be’chaini bahot badh-gayi thi. Fatimah-tuz-Zahra (Razi Allahu Anha) ne kaha: Aah Abba-Jaan ko kitni be-chaini hai. Huzoor ﷺ ne is par farmaya: Aaj ke baad tumhaare Abba-Jaan ki yeh be-chaini nahi rahegi. Phir jab Aap hazrat ﷺ ki wafaat ho gayi toh Fatimah (Razi Allahu Anha) kehti thi, Haaye Abba-Jaan! Aap apne Rabb ke bulaawe par chale-gaye, Haaye Abba-Jaan! Aap Jannat-ul-Firdous mein apne maqaam par chale-gaye. Ham Jibreel (Alaihissalam) ko Aap ﷺ ki wafaat ki khabar sunaate hain. Phir jab Aap hazrat ﷺ dafn kar diye gaye toh Aap (Razi Allahu Anha) ne Anas (Razi Allahu Anhu) se kaha: Anas! Tumhaare dil Rasool Allah ﷺ ki laash par mitti daalne ke liye kis tar’ah aamada ho gaye they.

(सहीह बुख़ारी: 4462)

फ़ाति़मा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की गवाही नबी ﷺ इंतक़ाल कर गए!

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ لَمَّا وَجَدَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ كَرْبِ الْمَوْتِ مَا وَجَدَ قَالَتْ فَاطِمَةُ وَا كَرْبَ أَبَتَاهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا كَرْبَ عَلَى أَبِيكِ بَعْدَ الْيَوْمِ إِنَّهُ قَدْ حَضَرَ مِنْ أَبِيكِ مَا لَيْسَ بِتَارِكٍ مِنْهُ أَحَدًا الْمُوَافَاةُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है उन्होंने बयान किया : जब रसूलुल्लाह: ﷺ को वफ़ात के वक़्त घबराहट (या तकलीफ़) मह़सूस हुई, तो हज़रत फ़ाति़मा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने फ़रमाया : "हाय अब्बा-जान की तकलीफ़!"अल्लाह: के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : "आज के बाद तेरे वालिद को कोई तकलीफ़ नहीं होगी! तेरे वालिद को वह चीज़ (मौत) पेश आ गई है, जिससे किसी को छुटकारा नहीं। क़यामत के रोज़ मुलाक़ात होगी।"

Hazrat Anas bin Malik (Razi Allahu Anhu) se riwayat hai unhone bayaan kiya: Jab Rasool Allah ﷺ ko wafaat ke waqt ghabrahat (ya takleef) mehsoos huwi toh Hazrat Fatimah (Razi Allahu Anha) ne farmaya: Haaye Abba-Jaan ki takleef! Allah ke Rasool ﷺ ne farmaya: "Aaj ke baad tere waalid ko koi takleef nahi hogi! Tere waalid ko woh cheez (maut) pesh aa gayi hai, Jissey kisi ko chhut-kaara nahi. Qayamat ke roz mulaqaat hogi."

(सुनन इब्ने माजा: 1629)

वज़ाहत : (स्पष्टीकरण) : कुछ लोग कहते हैं कि नबी ﷺ हमारे पीरों और बुज़ुर्गों के पास आते हैं। लेकिन यहाँ इस ह़दीथ में नबी ﷺ ने ख़ुद अपनी बेटी फ़ाति़मा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कहा कि अब हमारी मुलाक़ात क़यामत के दिन होगी। इससे यह बात भी षाबित होती है कि नबी ﷺ का दुनिया से तअ़ल्लुक़ ख़त्म हो चुका है।

फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की गवाही नबी ﷺ इंतक़ाल कर गए!

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ : قَالَتْ لِي فَاطِمَةُ : يَا أَنَسُ كَيْفَ سَخَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا التُّرَابَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ وحَدَّثَنَا ثَابِتٌ ، عَنْ أَنَسٍ ، أَنَّ فَاطِمَةَ ، قَالَتْ : حِينَ قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، «وَا أَبَتَاهُ ، إِلَى جِبْرَائِيلَ أَنْعَاهُ ، وَا أَبَتَاهُ ، مِنْ رَبِّهِ مَا أَدْنَاهُ وَا أَبَتَاهُ ، جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ ، وَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ»
قَالَ حَمَّادٌ فَرَأَيْتُ ثَابِتًا حِينَ حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ بَكَى حَتَّي رَأَيْتُ أَضْلَاعَهُ تَخْتَلِفُ.

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है, उन्होंने फरमाया : मुझे हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने फ़रमाया: "ऐ अनस! तुम्हारे दिलों ने यह कैसे गवारा किया कि तुम अपने हाथों से रसूलुल्लाह: ﷺ के पाक जिस्म पर मिट्टी डाल दो?" हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने (आगे) फ़रमाया: जब रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात हुई, तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने फ़रमाया: "हाय अब्बा-जान! मैं जिब्रील (अ़लैहिस्सलाम) को आपकी वफ़ात की ख़बर देती हूँ। हाय अब्बा-जान! आपको अपने रब का कितना क़ुर्ब हासिल है। हाय अब्बा-जान! जन्नतुल फ़िरदौस आपका ठिकाना है! हाय अब्बा-जान! रब ने आपको बुलाया और आपने उसके बुलावे पर लब्बैक कह दिया।"हम्माद बिन ज़ैद (रहीमहुल्लाह:) बयान करते हैं कि मैंने (अपने उस्ताद और हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) के शागिर्द) जनाब षाबित (रहीमहुल्लाह:) को देखा कि जब उन्होंने यह हदीष बयान फ़रमाई, तो बहुत रोए, यहाँ तक कि मुझे उनकी पसलियाँ ऊपर-नीचे होती नज़र आईं।

Hazrat Anas bin Malik (Razi Allahu Anhu) se riwaayat hai, Unhone farmaya: Mujhe Hazrat Fatimah (Razi Allahu Anha) ne farmaya: Anas! Tumhaare dilon ne yeh kaise gawaara kiya keh, Tum apne haaton se Rasool Allah ﷺ (ke jasad-e-athar) par mitti daal do? Hazrat Anas (Razi Allahu Anhu) ne (mazeed) farmaya: Jab Rasool Allah ﷺ ki wafaat huwi toh Hazrat Fatimah (Razi Allahu Anha) ne farmaya: Haaye Abba-Jaan! Main Jibreel ko aap ki wafaat ki khabar deti hun. Haaye Abba-Jaan! Aap ko apne Rabb ka kitna qurb haasil hai. Haaye Abba-Jaan! Jannat-ul-Firdous aapka thikaana hai! Haaye Abba-Jaan! Rabb ne aap ko bulaaya aur aapne uske bulaawe par labbaik keh diya. Hammad bin Zaid (Rahimullah) bayaan karte hain keh, maine (apne ustaad aur Hazrat Anas (Razi Allahu Anhu) ke shagird) Janab Saabit (Rahimullah) ko dekha keh, Jab unhone yeh Hadees bayaan farmayi toh, Bahot roye hatta keh, Mujhe aap ki phasliyan upar neeche hoti nazar aati.

(सुनन इब्ने माजा : 1630)

जिब्राईल और मीकाईल ने नबी ﷺ की वफ़ात के बाद की जगह बताई !

وَأَنَا جِبْرِيلُ وَهَذَا مِيكَائِيلُ فَارْفَعْ رَأْسَكَ فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا فَوْقِي مِثْلُ السَّحَابِ ، قَالَا : ذَاكَ مَنْزِلُكَ ، قُلْتُ :
دَعَانِي أَدْخُلْ مَنْزِلِي ، قَالَا : إِنَّهُ بَقِيَ لَكَ عُمُرٌ لَمْ تَسْتَكْمِلْهُ فَلَوِ اسْتَكْمَلْتَ أَتَيْتَ مَنْزِلَكَ .

जब जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) ने नबी करीम ﷺ को जहन्नुम और जन्नत की सैर कराई, तो उसके बाद जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) ने नबी करीम ﷺ से फ़रमाया : "मैं जिब्राईल हूँ और ये मेरे साथ मीकाईल हैं। अच्छा अब अपना सर उठाओ।" मैंने जब सर उठाया तो क्या देखता हूँ कि मेरे ऊपर बादल की त़रह़ कोई चीज़ है। मेरे साथियों ने कहा: "ये तुम्हारा मकान है।" इस पर मैंने कहा: "फिर मुझे अपने मकान में जाने दो।" उन्होंने कहा: "अभी तुम्हारी उम्र बाकी है, जो तुमने पूरी नहीं की। अगर तुम वो पूरी कर लेते तो अपने मकान में आ जाते।"

Jab Jibraeel (Alaihissalam) ne Nabi Kareem ﷺ ko Jahannum aur Jannat ki sair karaayi to uske baad Jibraeel (Alaihissalam) ne Nabi Kareem ﷺ se farmaya keh, “Main Jibraeel hun aur yeh mere saath Mikaa'eel hain. Achcha ab apna sar-uthaao. Main ne jo sar uthaaya toh kya dekhta hun keh, Mere oopar baadal (cloud) ki tar’ah koi cheez hai. Mere saathiyon ne kaha keh, Yeh tumhaara makaan hai. Ispar main ne kaha ke phir mujhe apne makaan mein jaane do. Unhone kaha ke abhi tumhaari umr (age) baaqi hai, Jo tumne poori nahi ki. Agar aap woh poori kar lete to apne makaan mein aa-jaate.”

(सहीह बुखारी: 1386)

वज़ाह़त : (स्पष्टीकरण) : स़ह़ीह़ बुख़ारी की इस ह़दीष से मअ़लूम होता है कि अल्लाह: के नबी ﷺ को ज़िंदगी में ही बता दिया गया था कि वफ़ात के बाद की जगह कहाँ पर है। लोग ये कहते हैं कि नबी ﷺ क़ब्र में हैं, लेकिन इस ह़दीष से वाज़ेह़ है कि नबी ﷺ मकाम (जन्नत) पर हैं, क़ब्र में नहीं।

रसूल अल्लाहः ﷺ की वफ़ात पर अबू बक्र स़िद्दीक़ ؓ का ख़ुत़्बा!

أَبُو بَكْرٍ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ، وَقَالَ : أَلَا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ , وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا
يَمُوتُ ، وَقَالَ : إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ سورة الزمر آية ٠ ، وَقَالَ : وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ
انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشَّا كِرِينَ سورة آل عمران آية

ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पहले अल्लाहः की ह़म्द और षना बयान की। फिर फ़रमाया: "लोगो! देखो अगर कोई मुह़म्मद ﷺ को पूजता था (यअ़नि यह समझता था कि वह आदमी नहीं हैं, वह कभी नहीं मरेंगे) तो उसे मअ़लूम होना चाहिए कि ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ की वफ़ात हो चुकी है। और जो शख़्स अल्लाहः की इ़बादत करता था, तो अल्लाहः हमेशा ज़िंदाः है, उसे मौत कभी नहीं आएगी।"(फिर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरः ज़ुमर की यह आयत पढ़ी) "ऐ पैगंबर! आप भी मरने वाले हैं और वे भी मरेंगे।" और अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि "मुह़म्मद ﷺ स़िर्फ़ एक रसूल हैं। इससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं। पस क्या अगर वह वफ़ात पा जाएं या उन्हें शहीद कर दिया जाए तो तुम इस्लाम से फिर जाओगे? और जो शख़्स अपनी एड़ियों के बल फिर जाए तो वह अल्लाहः को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और अल्लाहः अ़नक़रीब शुक्रगुज़ार बंदों को बदला देने वाला है।

Abu Bakr (Razi Allaahu Anhu) ne pehle Allah ki Hamd-o-Sana bayaan ki. Phir farmaya: Logon! Dekho agar koi Muhammad ﷺ ko poojta tha (yaani yeh samajhta tha ke woh aadmi nahi hain, Woh kabhi nahi marenge) to usey maloom hona chaahiye keh, Muhammad ﷺ ki wafaat ho chuki hai aur jo shakhs Allah ki pooja karta tha toh, Allah hamesha zinda hai, Usey maut kabhi nahi aayegi. (Phir Abu Bakr (Razi Allaahu Anhu) ne Surah Az-Zumar ki yeh aayat padhi) "Inna-ka Mayyitun Wa Inna-hum Mayyitun" “Aye Paighambar! Tum bhi marne waale ho aur woh bhi marenge. ” Aur Allah ta’ala ne farmaya:
"Wa Ma Muhammadun Illa Rasoolun Qad Khalat Min Qablihi Rusul, Afain Maata Aw Qutilan Inqalabtum Ala A’qaabikum, Wa Man Yanqalib Ala A’qaibihi Falai Yadurra Allaha Shai’a, Wa Sayajzil Lahu Ash-Shakireen"
“Mohammad ﷺ sirf ek Rasool hain. Is se pehle bhi bahot se Rasool guzar chuke hain. Pas kya agar woh wafaat paa-jaayen ya unhein shaheed kar diya jaaye toh tum Islam se phir jaaoge? Aur jo shakhs apni eediyon ke bal phir jaaye toh woh Allah ko koi nuqsaan nahi pahuncha sakega aur Allah an-qareeb shukarguzaar bandon ko badla dene waala hai.”

(स़ह़ीह़ बुख़ारी: 3668)

70 स़हाबा किराम की शहादत का बयान!

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ، أَنّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَتَاهُ رِعْلٌ وَذَكْوَانُ وَعُصَيَّةُ وَبَنُو لَحْيَانَ فَزَعَمُوا أَنَّهُمْ قَدْ أَسْلَمُوا وَاسْتَمَدُّوهُ عَلَى قَوْمِهِمْ ، فَأَمَدَّهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعِينَ مِنَ الْأَنْصَارِ ، قَالَ : أَنَسٌ كُنَّا نُسَمِّيهِمُ الْقُرَّاءَ يَحْطِبُونَ بِالنَّهَارِ وَيُصَلُّونَ بِاللَّيْلِ فَانْطَلَقُوا بِهِمْ حَتَّي بَلَغُوا بِئْرَ مَعُونَةَ غَدَرُوا بِهِمْ وَقَتَلُوهُمْ ، فَقَنَتَ شَهْرًا يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لَحْيَانَ ، قَالَ : قَتَادَةُ ، وَحَدَّثَنَا أَنَسٌ أَنَّهُمْ قَرَءُوا بِهِمْ قُرْآنًا أَلَا بَلِّغُوا عَنَّا قَوْمَنَا بِأَنَّا قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا ، ثُمَّ رُفِعَ ذَلِكَ بَعْدُ .

अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान किया। नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में रअ़ल, ज़कवान, उ़स़य्या और बनू लह़यान क़बीलों के कुछ लोग आए और उन्होंने यक़ीन दिलाया कि वे इस्लाम क़ुबूल कर चुके हैं। उन्होंने अपनी काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में तअ़लीम व तब्लीग़ और इमदाद के लिए आप से मदद मांगी। तो नबी करीम ﷺ ने सत्तर अंस़ारियों को उनके साथ भेज दिया। अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान किया कि हम उन्हें क़ारी (क़ुरआन पढ़ने वाले) कहते थे। वे लोग दिन में जंगल से लकड़ियां इकट्ठा करते और रात में नमाज़ पढ़ते रहते। ये ह़ज़रात उन क़बीलों के साथ गए, लेकिन जब बिर मऊ़ना पहुंचे तो उन क़बीले वालों ने इन स़ह़ाबा किराम के साथ दग़ा की और उन्हें शहीद कर दिया। हुज़ूर अकरम ﷺ ने एक महीने तक नमाज़ में क़ुनूत पढ़ी और रअ़ल, ज़कवान और बनू लह़यान के लिए बद्दुआ़ करते रहे। क़तादा: ने कहा कि अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हमसे कहा कि (इन शहीदों के बारे में) क़ुरआन मजीद में हम यह आयत पढ़ते रहे : (तर्जुमा) "हां! हमारी कौम (मुसलमानों) को बता दो कि हम अपने रब से जा मिले। वह हमसे राज़ी हो गया और उसने हमें भी ख़ुश किया।" फिर यह आयत मंसूख़ हो गई।

Anas (Razi Allahu Anhu) Ne Bayan Kiya, Nabi Kareem ﷺ ki khidmat mein Ra'al Zakwan, Asiyah aur Banu Lahyan qabail ke kuch log aaye aur yaqeen dilaaya keh, Woh log Islam la-chuke hain aur unhone apni kaafir-qaum ke muqaabil imdaad aur taleem-o-tableegh ke liye aapse madad chaahi. toh Nabi Kareem ﷺ ne sattar Ansariyon ko unke saath kar-diya. Anas (Razi Allahu Anhu) ne bayaan kiya keh, Ham unhein Qari kaha karte they. Woh log din mein jungle se lakriyan jamaa-karte aur raat mein namaaz padte rehte. Yeh hazraat un qabila waalon ke saath chale-gaye, Lekin jab Bir Mauna par pahunche toh un qabila waalon ne in Sahaba kiraam ke saath dagha ki aur unhein shaheed kar-daala. Huzoor Akram ﷺ ne ek mahina tak (namaaz mein) Qunoot padhi aur Ra'al Zakwan aur Banu Lahyan ke liye bad'dua karte rahe. Qatadah ne kaha ke hamse Anas (Razi Allahu Anhu) ne kaha ke (in shuhada ke baare mein) Qur'an-e-Majeed mein ham yeh Aayat yun padte rahe (tarjuma) "Haan! Hamaari qaum (Muslim) ko bata do keh, Ham apne Rabb se jaa-mile. Aur woh ham se raazi ho-gaya hai aur hamein bhi usne khush kiya hai." Phir yeh aayat mansookh ho gayi thi.

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 3064)

70 स़ह़ाबा किराम की शहादत का बयान!

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ , قَالَ : بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعِينَ رَجُلًا لِحَاجَةٍ , يُقَالُ لَهُمْ : الْقُرَّاءُ , فَعَرَضَ لَهُمْ حَيَّانِ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ , رِعْلٌ , وَذَكْوَانُ عِنْدَ بِئْرٍ يُقَالُ لَهَا : بِئْرُ مَعُونَةَ , فَقَالَ الْقَوْمُ : وَاللّٰهِ مَا إِيَّاكُمْ أَرَدْنَا إِنَّمَا نَحْنُ مُجْتَازُونَ فِي حَاجَةٍ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَتَلُوهُمْ , فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ شَهْرًا فِي صَلَاةِ الْغَدَاةِ , وَذٰلِكَ بَدْءُ الْقُنُوتِ وَمَا كُنَّا نَقْنُتُ , قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ : وَسَأَلَ رَجُلٌ أَنَسًا عَنِ الْقُنُوتِ أَبَعْدَ الرُّكُوعِ أَوْ عِنْدَ فَرَاغٍ مِنَ الْقِرَاءَةِ ؟ قَالَ : لَا بَلْ عِنْدَ فَرَاغٍ مِنَ الْقِرَاءَةِ .

अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान किया। नबी करीम ﷺ ने सत्तर स़ह़ाबा की एक जमाअ़त तब्लीग़-ए-इस्लाम के लिए भेजी थी। उन्हें क़ारी कहा जाता था। रास्ते में बनू सलीम के दो क़बीले रअ़ल और ज़क़वान ने एक कुएँ के क़रीब उनके साथ मज़ाहमत की। यह कुआँ "बिअर मऊ़ना" के नाम से मशहूर था। स़ह़ाबा ने उनसे कहा कि ख़ुदा की क़सम! हम तुम्हारे ख़िलाफ़ यहाँ लड़ने नहीं आए बल्कि हमें तो रसूलुल्लाह: ﷺ की त़रफ़ से एक ज़रूरत पर मअ़मूर किया गया है। लेकिन कुफ़्फ़ार के इन क़बीलों ने तमाम स़ह़ाबा को शहीद कर दिया।इस वाक़िआ: के बाद हुज़ूर ﷺ सुबह़ की नमाज़ में उनके लिए एक महीने तक बद-दुआ करते रहे। उसी दिन से दुआ-ए-क़ुनूत की इब्तिदा हुई, वरना इससे पहले हम दुआ-ए-क़ुनूत नहीं पढ़ा करते थे। और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन स़ुहैब ने बयान किया कि एक स़ाह़ब (आ़स़िम अह़वल) ने अनस (रज़िअल्लाहु अन्हु) से दुआ-ए-कुनूत के बारे में पूछा कि यह दुआ रुकूअ़ के बाद पढ़ी जाएगी या क़िराअत-ए-क़ुरआन से फ़ारिग़ होने के बाद (रुकूअ़ से पहले)? अनस (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया कि नहीं, बल्कि क़िराअत-ए-क़ुरआन से फ़ारिग़ होने के बाद (रुकूअ़ से पहले)।

Anas (Razi Allahu Anhu) Ne Bayan Kiya, Nabi Kareem ﷺ ne sattar (70) sahaba kiraam ki ek jama'at tabligh Islam ke liye bheji thi. Unhein Qari kaha jaata tha. Raaste mein Banu Saleem ke do qabile Ra'al aur Zakwan ne ek kunwen ke qareeb unke saath muzahimat ki. Yeh kunwa "Bir Mauna" ke naam se mashhoor tha. Sahaba kiraam ne unse kaha keh Khuda ki qasam! Ham tumhaare khilaaf yahan ladhne nahi aaye balki hamein toh Rasool Allah ﷺ ki taraf se ek zaroorat par mamoor kiya gaya hai. Lekin kuffaar ke in qabaailon ne tamaam sahaba kiraam ko shaheed kar-diya. Is waqiya ke baad Huzoor ﷺ subah ki namaaz mein unke liye ek mahina tak bad'dua karte rahe. Isi din se Dua-e-Qunoot ki ibtidaa huwi, Warna issey pehle ham Dua-e-Qunoot nahi padha karte they. Aur Abdul Aziz bin Suhaib ne bayaan kiya keh, Ek sahib (Asim Ahwal) ne Anas (Razi Allahu Anhu) se Dua-e-Qunoot ke baare mein poocha keh, Yeh dua ruku ke baad padhi jaayegi ya Qirat-e-Qur'an se faarigh hone ke baad? (Ruku se pehle) Anas (Razi Allahu Anhu) ne farmaya keh, nahi balki Qirat-e-Qur'an se faarigh hone ke baad (ruku se pehle).

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 4088)

शहीद भी मरने के बाद मोहताज दुनिया में वापस आकर क़र्ज़ न चुका सके

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ , قَالَ : لَمَّا حَضَرَ أُحُدٌ دَعَانِي أَبِي مِنَ اللَّيْلِ , فَقَالَ : مَا أُرَانِي إِلَّا مَقْتُولًا فِي أَوَّلِ مَنْ يُقْتَلُ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، وَإِنِّي لَا أَتْرُكُ بَعْدِي أَعَزَّ عَلَيَّ مِنْكَ غَيْرَ نَفْسِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَإِنَّ عَلَيَّ دَيْنًا فَاقْضِ وَاسْتَوْصِ بِأَخَوَاتِكَ خَيْرًا , فَأَصْبَحْنَا فَكَانَ أَوَّلَ قَتِيلٍ وَدُفِنَ مَعَهُ آخَرُ فِي قَبْرٍ ، ثُمَّ لَمْ تَطِبْ نَفْسِي أَنْ أَتْرُكَهُ مَعَ الْآخَرِ فَاسْتَخْرَجْتُهُ بَعْدَ سِتَّةِ أَشْهُرٍ ، فَإِذَا هُوَ كَيَوْمِ وَضَعْتُهُ هُنَيَّةً غَيْرَ أُذُنِهِ .

जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा जब जंगे-उहुद का वक़्त क़रीब आ गया तो मुझे मेरे बाप अ़ब्दुल्लाह: ने रात को बुला कर कहा कि मुझे ऐसा दिखाई देता है कि नबी करीम ﷺ के साथियों मैं सबसे पहला मक़तूल मैं ही हूँगा और देखो नबी करीम ﷺ के सिवा दूसरा कोई मुझे (अपने अज़ीज़ों और वारिसों में) तुम से ज़्यादा: अज़ीज़ नहीं है. मैं मक़रूज़ हूँ इसलिये तुम मेरा क़र्ज़ अदा कर देना.

Jaber (Razi Allahu Anhu) Ne Kaha Mujhe Mere Baap Abdullah Ne Kaha Jab jang Uhad ka waqt qareeb aa gaya toh, Mujhe mere baap Abdullah ne raat ko bula kar kaha keh, Mujhe aisa dikhaayi deta hai keh, Nabi Kareem ﷺ ke ashaab mein sab se pehla maqtool main hi hunga, Aur dekho Nabi Kareem ﷺ ke siwa doosra koi mujhe (apne azeezon aur waarison mein) tum se zyada azeez nahi hai. Main maqrooz hoon, Is liye tum mera qarz adaa kar dena

(स़हीह़ बुख़ारी - 1351)

वज़ाहत : इस हदीस से साबित होता है कि सहाबा और शहीद हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी अपना क़र्ज़ चुकाने के लिए दुनिया में वापसी नहीं कर सकते। मरने के बाद तो क्या हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी और दूसरे पीर भी दुनिया में आ सकते हैं? ज़रा ग़ौर करो मुसलमानों! मरने के बाद कोई भी किसी भी तरह वापस नहीं आ सकता।

मरने के बाद दुनियां में कोई वापस नहीं आ सकता!

قَالَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، يَقُولُ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لِي: يَا جَابِرُ، مَا لِي أَرَاكَ مُنْكَسِرًا ؟ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، اسْتُشْهِدَ أَبِي، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ عِيَالًا وَدَيْنًا ، قَالَ: أَفَلَا أُبَشِّرُكَ بِمَا لَقِيَ اللَّهُ بِهِ أَبَاكَ ؟ قَالَ: قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: مَا كَلَّمَ اللَّهُ أَحَدًا قَطُّ إِلَّا مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ، وَأَحْيَا أَبَاكَ فَكَلَّمَهُ كِفَاحًا ، فَقَالَ: يَا عَبْدِي، تَمَنَّ عَلَيَّ أُعْطِكَ، قَالَ: يَا رَبِّ، تُحْيِينِي فَأُقْتَلَ فِيكَ ثَانِيَةً، قَالَ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: إِنَّهُ قَدْ سَبَقَ مِنِّي أَنَّهُمْ إِلَيْهَا لَا يُرْجَعُونَ، قَالَ: وَأُنْزِلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ وَلا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا سورة آل عمران آية ، قَالَ أَبُو عِيسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ مِنْ هَذَا الْوَجْهِ، وَلَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ مُوسَى بْنِ إِبْرَاهِيمَ، وَرَوَاهُ عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْمَدِينِيِّ وَغَيْرُ وَاحِدٍ مِنْ كِبَارِ أَهْلِ الْحَدِيثِ، هَكَذَا عَنْ مُوسَى بْنِ إِبْرَاهِيمَ، وَقَدْ رَوَى عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنْ جَابِرٍ شَيْئًا مِنْ هَذَا.

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि रसूल अल्लाह: ﷺ मुझ से मिले और फ़रमाया : "जाबिर! क्या बात है मैं तुझे शिकस्ता दिल देख रहा हूँ?" मैंने कहा : अल्लाह: के रसूल! मेरे वालिद शहीद कर दिए गए, जंग उहुद में इनके क़त्ल का सानिहा पेश आया और वो बाल-बच्चे और क़र्ज़ छोड़ गए हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की बशारत न दूँ जिसे अल्लाह: तआ़ला ने तुम्हारे बाप से मुलाक़ात के वक़्त कहा?" उन्होंने कहा: क्यूँ नहीं? अल्लाह: के रसूल! ﷺ आप ने फरमाया: "अल्लाह: तआ़ला ने कभी भी किसी से बग़ैर पर्दे के कलाम नहीं किया, (लेकिन) उसने तुम्हारे बाप को ज़िंदा: किया, फिर उनसे (बिना पर्दे के) आमने-सामने बात की। कहा: ऐ मेरे बन्दे! मुझ से किसी चीज़ के ह़ासिल करने की तमन्ना और आरज़ू कर, मैं तुझे दूँगा। उन्होंने कहा : रब! मुझे दुबारा ज़िंदा: फ़रमा, ताकि मैं तेरी राह में दुबारा शहीद किया जाऊँ। रब अज़्ज़वजल ने फ़रमाया: मेरी त़रफ़ से ये फ़ैसला पहले हो चुका है : "أنهم إليها لا يرجعون" कि लोग दुनिया में दोबारा न भेजे जाएँगे। रावी कहते हैं : आयत ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أموات इसी सिलसिले में नाज़िल हुई।

Jaabir bin Abdullah (Razi Allahu Anhu) kehte hain keh, Rasool Allah ﷺ mujh se mile aur farmaya: "Jaabir! Kya baat hai, Main tujhe shikasta dil dekh raha hun? "Maine kaha: "Allah ke Rasool! Mere waalid shaheed kar diye gaye jung-e-Uhud mein unke qatal ka saneha Pesh Aaya, Aur wo baal-bachey aur qarz chhord gaye hain." Aap ﷺ ne farmaya: "Kya main tumein us cheez ki bashaarat na dun, Jo Allah ta'ala ne tumhaare baap se mulaqaat ke waqt kaha? "Unhone kaha: "Kyun nahi, Allah ke Rasool!" Aap ﷺ ne farmaya: Allah ta'ala ne kabhi bhi kisi se baghair parda keh, Kalaam nahi kiya (lekin) usne tumhaare waalid ko zinda kiya, Phir unse (baghair parda ke) aamne-saamne baat ki, Aur kaha: Aye mere bande! Mujh se kisi cheez ke haasil karne ki tamanna aur aarzu kar, Main tujhe dunga. 'Unhone kaha: 'Rabb! Mujhe dubaara zinda farma, Taake main teri raah mein dubaara shaheed kiya jaaon Rabb ne farmaya: 'Meri taraf se yeh faisla pehle ho chuka hai " "أنهم إليها لا يرجعون" ke log duniya mein dubaara na bheje jaayenge.'Raavi kehte hain: Aayat " ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أموات isi silsile mein naazil huwi.

(स़ह़ीह़ मुस्लिम 4885 सुनन तिर्मिज़ी : 3010)

मरने के बाद दुनियां में कोई वापस नहीं आ सकता!

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ قَوْلِهِ: وَلا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ سورة آل عمران آية ، فَقَالَ: أَمَا إِنَّا قَدْ سَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ فَأُخْبِرْنَا ، أَنَّ أَرْوَاحَهُمْ فِي طَيْرٍ خُضْرٍ تَسْرَحُ فِي الْجَنَّةِ حَيْثُ شَاءَتْ وَتَأْوِي إِلَى قَنَادِيلَ مُعَلَّقَةٍ بِالْعَرْشِ، فَاطَّلَعَ إِلَيْهِمْ رَبُّكَ اطِّلَاعَةً، فَقَالَ: هَلْ تَسْتَزِيدُونَ شَيْئًا فَأَزِيدُكُمْ؟ قَالُوا: رَبَّنَا وَمَا نَسْتَزِيدُ وَنَحْنُ فِي الْجَنَّةِ نَسْرَحُ حَيْثُ شِئْنَا ، ثُمَّ اطَّلَعَ إِلَيْهِمُ الثَّانِيَةَ فَقَالَ: هَلْ تَسْتَزِيدُونَ شَيْئًا فَأَزِيدُكُمْ؟ فَلَمَّا رَأَوْا أَنَّهُمْ لَمْ يُتْرَكُوا قَالُوا: تُعِيدُ أَرْوَاحَنَا فِي أَجْسَادِنَا حَتَّي نَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَنُقْتَلَ فِي سَبِيلِكَ مَرَّةً أُخْرَى ، قَالَ أَبُو عِيسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ.

अ़ब्दुल्लाह: बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि उनसे आयत :
"वला तह़सबन्नल्लज़ीना क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातन बल अह़याउन इंदा रब्बिहिम युर्ज़क़ून" **की तफ़्सीर पूछी गई। उन्होंने कहा: लोगो! सुनो, हमने (रसूलुल्लाह: ﷺ से) इसकी तफ़्सीर पूछी थी। हमें बताया गया कि शहीदों की रुह़ें हरी चिड़ियों की शक्ल में हैं, जो जन्नत में जहाँ चाहती हैं, घूमती-फिरती हैं और शाम को अर्श से लटकी हुई क़ंदीलों में बसेरा करती हैं। एक बार तुम्हारे रब ने उनकी तरफ़ झाँक कर एक नज़र देखा और पूछा: "क्या तुम्हें और कुछ चाहिए, जो मैं तुम्हें अ़ता करूँ?" उन्होंने कहा: रब! हमें और कुछ नहीं चाहिए। हम जन्नत में जहाँ चाहते हैं, घूमते हैं। फिर (एक दिन) अल्लाह: ने दोबारा उनकी त़रफ़ झाँका और फ़रमाया: "क्या तुम्हें और कुछ चाहिए, जो मैं अ़ता कर दूँ?" जब उन्होंने देखा कि अल्लाह: देने पर ही तुला हुआ है, बिना माँगे और लिए छुटकारा नहीं है, तो उन्होंने कहा: हमारी रुहों को हमारे शरीरों में दोबारा लौटा दे, ताकि हम दुनिया में वापस चले जाएँ और तेरी राह में दोबारा क़त्ल किए जाएँ।**

Abdullah bin Masood (Razi Allahu Anhu) se riwaayat hai keh unse Aayat
ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أمواتا بل أحياء عند ربهم يرزقون
ki tafseer poochi gayi, toh unhone kaha: "Logon! sunlo, Hamne (Rasool Allah ﷺ se) iski tafseer poochi thi, To hamein bataaya gaya keh, shuhada ki roohein sabz chidiyon ki shakal mein hain, Jannat mein jahan chahti hain ghoomti phirti hain, Aur shaam ko Arsh se latki huwi qandeelon mein basera karti hain."Ek baar tumhaare Rabb ne unhein jhaank-kar ek nazar dekha aur farmaya: 'Tumhein koi cheez mazeed chaahiye toh main tumhein ataa karun?' Unhone jawaab diya: 'Rabb! Hamein mazeed kuch nahi chaahiye, Ham Jannat mein jahan chahti hain, Ghoom rahi hain."Phir ek din Allah ne dubaara unki taraf jhaanka aur farmaya: 'Kya tumhein mazeed kuch chaahiye toh main ataa kar dun?' Jab unhone dekha ke (Allah dene par hi tula huwa hai aur bina maange aur liye chutkaara nahi hai), Toh unhone kaha: 'Hamaari roohun ko hamaare jismon mein dubaara lautaade, taake ham duniya mein waapas chale jaayein aur teri raah mein dubaara qatal kiye jaayein.'

(सुनन तिर्मिज़ी: 3011, मिश्कात: 3734)

नबी ﷺ वफ़ात के बाद अपना वादा न निभा सके

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ ، قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَوْ قَدْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَدْ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا ، فَلَمْ يَجِئْ مَالُ الْبَحْرَيْنِ حَتَّي قُبِضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَلَمَّا جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَمَرَ أَبُو بَكْرٍ فَنَادَى مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِدَةٌ أَوْ دَيْنٌ فَلْيَأْتِنَا ، فَأَتَيْتُهُ ، فَقُلْتُ : إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، قَالَ لِي : كَذَا وَكَذَا فَحَثَى لِي حَثْيَةً فَعَدَدْتُهَا ، فَإِذَا هِيَ خَمْسُ مِائَةٍ ، وَقَالَ : خُذْ مِثْلَيْهَا .

जुबैर बिन अब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने बयान किया है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, अगर बह्रैन से (जिज़िये का) माल आया तो मैं तुम्हें इस त़रह़ दोनों लप भर भर कर दूँगा लेकिन बह्रैन से माल नबी करीम ﷺ की वफ़ात तक नहीं आया फिर जब उसके बाद वहाँ से माल आया तो अबू-बक्र (रज़ि०) ने ऐलान करा दिया कि जिससे भी नबी करीम ﷺ का कोई वअ़दा: हो या आप पर किसी का क़र्ज़ हो वो हमारे यहाँ आ जाए. चुनांचे मैं ह़ाज़िर हुआ. और मैंने कहा कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे ये वो बातें फ़रमाई थीं. जिसे सुन कर अबू-बक्र (रज़ि०) ने मुझे एक लप भर कर दिया. मैंने उसे गिनती किया तो वो पाँच सौ की रक़म थी. फिर फ़रमाया कि इसके दो गुना और ले लो.

Jaber Bin Abdullah (Razi Allahu Anhu) Ne Bayaan Kiya Ke Nabi Kareem ﷺ ne farmaya: Agar Bahrain se (jizya ka) maal aaya to main tumhein is tar'ah dono lap bhar-bhar kar doonga, Lekin Bahrain se maal Nabi Kareem ﷺ ki wafaat tak nahi aaya. Phir jab us ke baad wahan se maal aaya to Abu Bakr (Razi Allahu Anhu) ne elaan kara diya ke, Jis se bhi Nabi Kareem ﷺ ka koi waada ho ya aap par kisi ka qarz ho woh hamaare yahan aa-jaaye. Chunanche main haazir huwa, Aur maine arz kiya ke Nabi Kareem ﷺ ne mujh se yeh woh baatein farmaayi thi. Jise sunkar Hazrat Abu Bakr (Razi Allahu Anhu) ne mujhe ek lap-bhar kar diya. Maine usey shumaar kiya to woh paanch sau (500) ki raqam thi. Phir farmaya ke iske do guna aur le lo

(सह़ीह़ बुख़ारी - 2296)

वजाहत : **इस ह़दीष से साबित होता है कि नबी ﷺ अपनी वफ़ात का इ़ल्म नहीं रखते थे न वफ़ात के बाद कुछ अ़मल कर सकते थे इस लिये अबू बकर स़िद्दिक़ (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने जाबिर (रज़िअल्लाहु अन्हु) को किया गया नबी ﷺ का वअ़दा: पूरा किया. तो यह अ़क़ीदा: नबी ﷺ देखते है, सुनते है, तशरीफ़ भी लाते हैं ग़लत़ हैं. यह अ़क़ीदे उ़लमा ए सू ने अपने धंदे चलाने मज़ारों का कारोबार बढ़ाने नज़र, नियाज़, उर्स का बिज़नेस चलाने अपना पेट पालने के लिए बना लिये.**

शिर्क करने वालों के लिये जहन्नुम से एक ख़त़रनाक गर्दन निकलेगी !

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَخْرُجُ عُنُقٌ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
لَهَا عَيْنَانِ تُبْصِرَانِ، وَأُذُنَانِ تَسْمَعَانِ، وَلِسَانٌ يَنْطِقُ، يَقُولُ: إِنِّي وُكِّلْتُ بِثَلَاثَةٍ: بِكُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ، وَبِكُلِّ مَنْ
دَعَا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ، وَبِالْمُصَوِّرِينَ

अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि रसूलुल्लाह: अल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया: "क़यामत के दिन जहन्नुम से एक गर्दन निकलेगी, उसकी दो आँखें होंगी जो देखेंगी, दो कान होंगे जो सुनेंगे और एक ज़ुबान होगी जो बोलेगी. वोह कहेगी: मुझे तीन लोगों पर मुक़र्रर किया गया है, हर सरकश ज़ालिम पर हर उस आदमी पर जो अल्लाह: के सिवा किसी दूसरे को पुकारता हो और मुजस्समा (मूर्ति) बनाने वालों पर."

Abu Hurairah (Razi Allahu Anhu) kehte hain keh Rasool Allah ﷺ ne farmaya: "Qayamat ke din Jahannum se ek gardan niklegi, Uski do-aankhein hongi, Jo dekhengi, Do kaan honge, Jo sunenge aur ek zubaan hogi, Jo bolegi. Woh kahegi: Mujhe teen logon par muqarrar kiya gaya hai, Har sar-kash zaalim par, har us aadmi par jo Allah ke siwa kisi doosre ko pukaarta ho, Aur mujassama (murti) banaane waalon par."

(सुनन तिर्मिज़ी : 2574)

वज़ाहत : जो लोग ग़ैरुल्लाह: को पुकारते हैं ग़ैरुल्लाह: से दुआ करते हैं तो, ऐसे लोगों के लिये जहन्नुम से एक ख़तरनाक गर्दन निकलेगी और वो इन लोगों को दर्दनाक अज़ाब देगी और जो अल्लाह: को छोड़ कर अल्लाह: के मरे हुवे (death) (फ़ौत शुदा) बंदों को पुकारते हैं या ग़ौष या ख़्वाजा अल-मदद तो ऐसे लोगों के लिये हमेशा की जहन्नुम है. **अल्लाह: शिर्क को मआफ़ नहीं करेगा.**

अगर ग़ैरुल्लाह: की नज़र नियाज़ तो ग़ैरुल्लाह: से ही अज्र ओ सवाब मांगले!

عَنْ أَبِي سَعْدِ بْنِ أَبِي فَضَالَةَ الْأَنْصَارِيِّ وَكَانَ مِنَ الصَّحَابَةِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا جَمَعَ اللهُ الْأَوَّلِينَ
وَالْآخِرِينَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ نَادَى مُنَادٍ مَنْ كَانَ أَشْرَكَ فِي عَمَلٍ عَمِلَهُ لِلّٰهِ فَلْيَطْلُبْ
ثَوَابَهُ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللهِ فَإِنَّ اللهَ أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ

सअ़द बिन अबी फ़ज़ाला: अन्सारी (रज़िअल्लाहुअन्हु) स़ह़ाबी थे, रिवायत करते हैं कि, रसूलुल्लाह: अल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया "जब क़यामत के दिन अल्लाह: तआ़ला पहले / अगले और पिछले तमाम इंसानो को जमअ करेगा. और वोह दिन ऐसा है, जिस में कोई शक नहीं. तब एक मुनादी (ऐ़ लान करने वाला) ऐ़लान करेगा जिसने अल्लाह: के लिये किये हुवे अ़मल में किसी को शरीक किया वोह. उस अ़मल का सवाब ग़ैरुल्लाह: ही से मांगे, क्यूँ के अल्लाह: तआ़ला दूसरे शरीकों के मुक़ाबले में शराकत (शिर्क) सबसे ज़्यादा: बेनियाज़ है.

Sa'ad bin Abi Fadala Ansari (Razi Allahu Anhu) Sahabi they, riwaayat karte hain keh, Rasool Allah ﷺ ne farmaya: "Jab Qayamat ke din Allah ta'ala pehle aur pichle tamaam insaano ko jamaa karega. Aur woh din aisa hai, Jis mein koi shak nahi. Tab ek munadi (elaan karne waala) elaan karega, 'Jisne Allah ke liye kiye huwe amal mein kisi ko shareek kiya, Woh us amal ka sawaab ghair-Allah hi se maange, Kyun ke Allah ta'ala doosre shareekon ke muqaable mein sharaakat (shirk) se sab se zyaada be-niyaaz hai.'

(सुनन इब्ने माजा : 4203)

वज़ाह़त : जो लोग ग़ैरुल्लाह: के लिये नज़र नियाज़ फ़ातिह़ा ख़ानी करते हैं. कल क़यामत के दिन अल्लाह: कहेगा, जिनके लिये तुमने अ़मल किया उनसे ही अब षवाब मांगो और यक़ीनन वो बुज़ुर्ग इनसे दूर भागेंगे और कहेंगे, हमने कब कहा था हमारी ग्यारहवीं बारहवीं नज़र नियाज़ फ़ातिह़ा करो? ग़ैरुल्लाह: की नज़र नियाज़ करने वालों का ठिकाना बहुत बुरा होगा.

जो अल्लाह: चाहे वोही होगा!

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا شَاءَ اللَّهُ
وَشِئْتَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَجَعَلْتَنِي وَاللَّهَ عَدْلًا بَلْ مَا شَاءَ اللَّهُ وَحْدَهُ

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि, एक आदमी ने नबी ﷺ से फ़रमाया, कहा "जो अल्लाह: चाहे और जो आप चाहें. "नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तू मुझे और अल्लाह: को बराबर कर रहा है? यूं कहो, जो अल्लाह: तने तन्हा चाहे."

Hazrat Ibn Abbas (Razi Allahu Anhu) se marwi hai keh, Ek aadmi ne Nabi ﷺ se kaha "Jo Allah chaahe aur jo aap chaahein." Nabi ﷺ ne farmaya: "Kya tu mujhe aur Allah ko baraabar kar raha hai? Yun kaho, Jo Allah tane-tanha chaahe."

(मुसनद अहमद : 1839)

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ , قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَلِمَةً ، وَقُلْتُ أُخْرَى قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :
مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ نِدًّا دَخَلَ النَّارَ , وَقُلْتُ : أَنَا مَنْ
مَاتَ وَهُوَ لَا يَدْعُو لِلَّهِ نِدًّا دَخَلَ الْجَنَّةَ .

अ़ब्दुल्लाह: (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने कहा कि "नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, और मैंने एक और बात कही. हुज़ूर ﷺ ने एक कलमा इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इस हालत में मर जाये कि, वोह अल्लाह: के सिवा औरों को भी उसका शरीक ठहराता रहा हो तो, वोह जहन्नम में जाता है, और मैंने यूं कहा कि, जो शख़्स इस हालत में मरे (death हो), कि अल्लाह: का किसी को शरीक ना ठहराता रहा तो वोह जन्नत में जाता है."

Abdullah (Razi Allahu Anhu) Ne Kaha Ki, "Nabi Kareem ﷺ ne ek kalma irshaad farmaya aur maine ek aur baat kahi. Huzoor ﷺ ne farmaya keh Jo shakhs is haalat mein mar-jaaye keh, Woh Allah ke siwa auron ko bhi uska shareek teh'rata raha ho toh, Woh jahannam mein jaata hai, Aur maine yun kaha keh, Jo shakhs is haalat mein mare (death ho) keh, Allah ka kisi ko shareek na teh'rata raha toh, Woh jannat mein jaata hai."

(सहीह बुख़ारी : 4497)

दीन में हर नया काम बिदअ़त है!

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۱﴾

"कह दीजिये! अगर तुम अल्लाहः से मुह़ब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो, ख़ुद अल्लाहः तुमसे मुह़ब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह मअ़ाफ़ फ़रमा देगा. और अल्लाहः तअ़ाला बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है."

"Keh dijiye! Agar tum Allah se muhabbat rakhte ho toh meri taabe'daari karo, Khud Allah tumse muhabbat karega aur tumhaare gunah maaf farma dega. Aur Allah ta'ala badaa bakhshne waala, meharbaan hai."

(सूरः आले इमरान 3 आयत 31)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صلى الله عليه وسلم قال:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي قَدْ تَرَكْتُ فِيكُمْ مَا إِنِ اعْتَصَمْتُمْ بِهِ فَلَنْ تَضِلُّوا أَبَدًا كِتَابَ اللَّهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ،

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु अन्हु) से रिवायत है के रसूलुल्लाहः ﷺ ने फ़रमाया:
ऐ लोगों! मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी चीज़ छोड़ी है कि अगर तुम इसे मज़बूती से थाम लो तो कभी गुमराह नहीं होगे.
अल्लाहः की किताब और उसके नबी ﷺ की सुन्नत.

Hazrat Ibn Abbas (Razi Allahu Anhu) se riwayat hai keh Rasool Allah ﷺ ne farmaya:
Aye logon! Maine tumhaare darmiyaan aisi cheez chohdhi hai keh agar tum isey mazbooti se thaam-lo toh kabhi gumrah nahi hoge:
Allah ki Kitaab aur uske Nabi ki Sunnat.

(अल सुनन अल कुबरा : 20838)

दीन में हर नया काम बिदअ़त है!

وَعَن إِبْرَاهِيم بن ميسرَة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:
«مَنْ وَقَّرَ صَاحِبَ بِدْعَةٍ فَقَدْ أَعَانَ عَلَى هَدْمِ الْإِسْلَامِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الايمان مُرْسلا

हज़रत इब्राहीम बिन मैसरा: (रज़िअल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं रसूलुल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया:
“जिस शख़्स ने किसी बिदअ़ती की तअ़ज़ीम व नुसरत की तो, उसने इस्लाम के गिराने पर मुआवनत की." (रवाहु अल बेहिक़ी फ़ी शुऐब अल ईमान 9464)

Hazrat Ibrahim bin Maisarah (Razi Allahu Anhu) bayaan karte hain Rasool Allah ﷺ ne farmaya:
“Jis shakhs ne kisi bid’ati ki ta’zeem-o-nusrat ki toh, Usne Islam ke giraane par mu’awnat ki.” (Rawaahu al-Bayhaqi fi Shu’ab al-Iman)

(मिश्कात उल मसाबिह : 189)

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَحَمِدَ اللّٰهَ وَأَثْنٰى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ
إِنَّ أَفْضَلَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ۔

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह: अन्सारी (रज़िअल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह: ﷺ ने ख़ुत्बा दिया और अल्लाह: की ह़म्द ओ सना बयान की. फिर फ़रमाया: "सबसे अफ़ज़ल त़रीक़ा मुह़म्मद ﷺ का त़रीक़ा है और सबसे बदतरीन काम नये काम (बिदअ़त) हैं. हर बिदअ़त गुमराही है."

Jabir bin Abdullah Ansari (Razi Allahu Anhu) se riwayat hai keh Hamein Rasool Allah ﷺ ne khutba diya aur Allah ki hamd-o-sanaa bayaan ki. Phir farmaya: "Sabse afzal tareeqa Muhammad ﷺ ka tareeqa hai aur sabse bad’tareen kaam naye kaam (bid'at) hain. Aur Har bid'at gumraahi hai."

(सह़ीह़ बुख़ारी : 7277, सुनन दारमी : 212)

दीन में हर नया काम बिदअ़त है!

قَالَ ابْنُ عُمَرَ: وَأَنَا أَقُولُ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، وَلَيْسَ هَكَذَا عَلَّمَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَّمَنَا، أَنْ نَقُولَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ ، قَالَ أَبُو عِيسَى: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ، لاَ نَعْرِفُهُ إِلاَّ مِنْ حَدِيثِ زِيَادِ بْنِ الرَّبِيعِ.

इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु अन्हु) के पहलू में बैठे हुवे, एक शख़्स को छींक आई तो उसने कहा: "अल-ह़म्दुलिल्लाह वस्सलाम अ़ला रसूलुल्लाह" (यअ़नि, तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह: के लिये है और सलाम हो रसूलुल्लाह: ﷺ पर. इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: "कहने को तो मैं भी अल-ह़म्दुलिल्लाह: वस्सलाम अ़ला रसूलुल्लाह: कह सकता हूँ,लेकिन इस त़रह़ कहना रसूलुल्लाह: ﷺ ने हमें नहीं सिखाया. आप नबी ﷺ ने हमें बताया है के, हम "अल-ह़म्दुलिल्लाह: अ़ला कुल्ली ह़ाल" (हर ह़ाल में तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह: ही के लिये है) कहें."

Ibn Umar (Razi Allahu Anhu) ke pehlu mein baithey huwe, Ek shakhs ko chheenk aayi toh usne kaha: "Alhamdulillah wassalam ala Rasoolillah" (Yaani, tamaam tareef Allah ke liye hai aur salaam ho Rasool Allah ﷺ par). Ibn Umar (Razi Allahu Anhu) ne farmaya: "Kehne ko toh main bhi 'Alhamdulillah wassalam ala Rasoolillah' keh sakta hun Lekin is tar'ah kehna Rasool Allah ﷺ ne hamein nahi sikhaaya. Aap ﷺ ne hamein bataaya hai keh, Ham 'Alhamdulillah ala kulli haal' (Har haal mein tamaam tareef Allah hi ke liye hai) kahen."

(सुनन तिर्मिज़ी : 2738)

वज़ाह़त : जब इब्ने उ़मर के सामने एक शख़्स ने छींक कर वोह लफ़्ज़ अदा किया जो नबी ﷺ से साबित नहीं था, तो इब्ने उ़मर ने उस शख़्स को तुरंत रोका. उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि नबी ﷺ ने जो त़रीक़ा सिखाया है, वही सुन्नत है, और इसमें अपनी त़रफ़ से किसी इज़ाफ़ा या तब्दीली की गुंजाइश नहीं और आज कल लोग अपनी त़रफ़ से दीन में नयी नयी बिदअ़तें ईजाद करते हैं, जिसका ठिकाना जहन्नुम है

ज़ुलमाह को अपना रब मत बनाओ!

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَ مَآ
اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

“उन लोगों ने अल्लाह: को छोड़कर अपने आ़लिमों और दरवेशों को रब बनाया है और मरयम के बेटे मसीह़ को, हालाँकि उन्हें स़िर्फ़ एक अकेले अल्लाह: ही की इ़बादत का ह़ुक्म दिया गया था, जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं। वह पाक है उनके शरीक मुकर्रर करने से."

"Un logon ne Allah ko chhord-kar apne aalimo aur darwaishon ko rabb banaaya hai aur Maryam ke bete Masih ko, haalan keh, Unhein sirf ek akele Allah hi ki ibaadat ka hukum diya gaya tha, Jiske siwa koi ma'bood nahi. Woh paak hai unke shareek muqarrar karne se"

عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي عُنُقِي صَلِيبٌ مِنْ ذَهَبٍ، فَقَالَ: يَا عَدِيُّ، اطْرَحْ عَنْكَ هَذَا الْوَثَنَ، وَسَمِعْتُهُ يَقْرَأُ فِي سُورَةِ بَرَاءَةٌ اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللّٰهِ سورة التوبة آية ، قَالَ: أَمَا إِنَّهُمْ لَمْ يَكُونُوا يَعْبُدُونَهُمْ، وَلَكِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا أَحَلُّوا لَهُمْ شَيْئًا اسْتَحَلُّوهُ وَإِذَا حَرَّمُوا عَلَيْهِمْ شَيْئًا حَرَّمُوهُ ، قَالَ أَبُو عِيسَى: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ، لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عَبْدِ السَّلَامِ بْنِ حَرْبٍ، وَغُطَيْفُ بْنُ أَعْيَنَ لَيْسَ بِمَعْرُوفٍ فِي الْحَدِيثِ.

हजरत अदी बिन हातिम (रजि अल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि "मैं नबी-ए-करीम ﷺ के पास आया, मेरी गर्दन में सोने की सलीब लटक रही थी। आपने फरमाया: 'अदी! इस बुत को निकालकर फेंक दो।' मैंने आपको सूर: बराअत की आयत (उन्होंने अल्लाह: को छोड़कर अपने आ़लिमों और राहिबों को मअ़बूद बना लिया है) (सूर: तौबा 9 : 31) पढ़ते हुए सुना. आपने फ़रमाया : 'वह लोग उनकी इ़बादत नहीं करते थे, लेकिन जब वह लोग किसी चीज़ को हलाल कह देते थे, तो वह लोग उसे ह़लाल मान लेते थे, और जब वह लोग उनके लिए किसी चीज को ह़राम ठहरा देते थे, तो वह लोग उसे ह़राम मान लेते थे."

Hazrat Adi Bin Hatim (Razi Allahu Anhu) Kehte Hai Ki, "Main Nabi-e-kareem ﷺ ke paas aaya, Meri gardan mein sone ki saleeb latak rahi thi, Aap ﷺ ne farmaya: 'Adi! Is butt ko nikaal-kar phenk do. 'Maine aap ko Surah Bara'at ki aayat 'Ittakhazu ahbaarahum wa ruhbaanahum arbaban min doonillah' (Unhone Allah ko chhord-kar apne aalimo aur raahibon ko ma'bood banaa liya hai) (At-Tawbah 9:31) padte huwe suna. Aap ﷺ ne farmaya: 'Woh log unki ibaadat na karte they, Lekin jab woh log kisi cheez ko halaal keh dete they, toh woh log usey halaal jaan lete they, Aur jab woh log unke liye kisi cheez ko haraam tehra dete toh woh log usey haraam maan lete they.'”

(सुनन तिर्मिजी : 3095)

जो अल्लाह: के नबी ﷺ का त़रीक़ा छोड़े वो ईमान वाला नहीं हो सकता !

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ ، أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ أَبِي حُمَيْدٍ الطَّوِيلُ ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، يَقُولُ : جَاءَ ثَلَاثَةُ رَهْطٍ إِلَى بُيُوتِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْأَلُونَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَلَمَّا أُخْبِرُوا كَأَنَّهُمْ تَقَالُّوهَا ، فَقَالُوا : وَأَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ ؟ قَالَ أَحَدُهُمْ : أَمَّا أَنَا ، فَإِنِّي أُصَلِّي اللَّيْلَ أَبَدًا ، وَقَالَ آخَرُ : أَنَا أَصُومُ الدَّهْرَ وَلَا أُفْطِرُ ، وَقَالَ آخَرُ : أَنَا أَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلَا أَتَزَوَّجُ أَبَدًا ، فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِمْ ، فَقَالَ : أَنْتُمُ الَّذِينَ قُلْتُمْ كَذَا وَكَذَا ، أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لَأَخْشَاكُمْ لِلَّهِ وَأَتْقَاكُمْ لَهُ لَكِنِّي أَصُومُ وَأُفْطِرُ ، وَأُصَلِّي وَأَرْقُدُ ، وَأَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ ، فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّي

तीन ह़ज़रात (अ़ली बिन अबी त़ालिब, बिन अ़ब्दुल्लाह: अम्र बिन अल-आ़स और उ़षमान बिन मज़ऊ़न (रज़िअल्लाहु अन्हुम) नबी करीम ﷺ की अज़वाजे मुतह्ह़रात के घरों की त़रफ़ आप की इ़बादत के मुतअ़ल्लिक़ पूछने आए, जब उन्हें हुज़ूर अकरम ﷺ का अ़मल बताया गया तो जैसे उन्होंने इसे कम समझा और कहा कि हमारा आँह़ज़रत ﷺ से क्या मुक़ाबला! आप की तो तमाम अगली पिछली ख़त़ा मआ़फ़ कर दी गई हैं। उन में से एक ने कहा कि आज से मैं हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ा करूंगा। दूसरे ने कहा कि मैं हमेशा रोज़े से रहूंगा और कभी नाग़ा नहीं होने दूंगा। तीसरे ने कहा कि मैं औरतों से जुदाई इख़्तियार कर लूंगा और कभी निकाह नहीं करूंगा। फिर आँह़ज़रत ﷺ तशरीफ़ लाए और उन से पूछा कि क्या तुम ने ही ये बातें कही हैं? सुन लो! अल्लाह: तआ़ला की क़सम! अल्लाह: रब्बुल आ़लमीन से मैं तुम सब से ज़्यादा: डरने वाला हूँ। मैं तुम सब से ज़्यादा: परहेज़गार हूँ लेकिन मैं अगर रोज़े रखता हूँ तो इफ़्त़ार भी करता हूँ। नमाज़ भी पढ़ता हूँ (रात में) और सोता भी हूँ और मैं औ़रतों से निकाह करता हूँ। मेरे त़रीक़े से जिस ने बे-रग़बती की वो मुझ में से नहीं है।

Teen hazraat (Ali bin Abi Talib, Abdullah bin Amr bin al-Aas aur Usman bin Maz'oon (Razi Allahu Anhum) Nabi-e-Kareem ﷺ ki azwaj-e-mutahharat ke gharon ki taraf aap ki ibaadat ke mutaaliq poochne aaye, Jab unhein Huzoor Akram ﷺ ka amal bataaya gaya toh, Jaise unhone usey kam samjha aur kaha ke hamaara Aap hazrat ﷺ se kya muqabla! Aap ki to tamaam agli pichli laghzishen maaf kardi gayi hain. Un mein se ek ne kaha ke aaj se main hamesha raat-bhar namaaz padha karunga. Doosre ne kaha ke main hamesha roza rakhunga aur kabhi Naagha (miss) nahi hone dunga. Teesre ne kaha ke main aurton se judaayi ikhtiyaar kar-lunga aur kabhi nikah nahi karunga. Phir Aap hazrat ﷺ tashreef laaye aur unsey poocha kya tumne hi yeh baatein kahi hain? Sun lo! Allah ta'ala ki qasam! Allah Rabbul Aalameen se main tum sab se zyaada darne waala hun. Main tum sabse zyaada parhezgaar hun, Lekin main agar roza rakhta hun toh iftaar bhi karta hun Namaaz bhi padhta hun (raat mein) aur sota bhi hun aur main aurton se nikah karta hun. Mere tareeqe se jisne be-raghbati ki woh mujh mein se nahi hai.

(स़ह़ीह़ बुख़ारी: 5063)

अगर तुम ईमान पर नहीं मरोगे तो मैं भी तुम्हारे काम ना आऊंगा!

أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، قَالَ : قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ سورة الشعراء آية ، قَالَ : يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ ، أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ ، لَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ ، لَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ، يَا عَبَّاسُ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ ، لَا أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ، وَيَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللَّهِ ، لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ، وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي ، لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا . تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنْ ابْنِ وَهْبٍ ، عَنْ يُونُسَ ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ .

अबू हुरैरा:, (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने कहा, जब (सूर: शुअ़रा की) यह आयत अल्लाह: तआ़ला ने उतारी -"और अपने नज़दीकी नाते वालों को अल्लाह: के अ़ज़ाब से डराओ" - तो रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: क़ुरैश के लोगो! या ऐसा ही कोई और कलिमा, तुम लोग अपनी-अपनी जानों को (नेक अ़ामाल के बदले) मोल ले लो (बचालो)। मैं अल्लाह: के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का (यअ़नि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का)। अ़ब्दे मनाफ़ के बेटो! मैं अल्लाह: के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत़लिब! मैं अल्लाह: के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। स़फ़िया मेरी फ़ूफ़ी! अल्लाह: के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का फ़ातिमा! बेटी! तू चाहे मेरा माल माँग ले लेकिन अल्लाह: के सामने तेरे कुछ काम नहीं आने का। अबु अल-यमान के साथ इस ह़दीष को आसबग़ ने भी अ़ब्दुल्लाह: बिन वह्ब से, उन्होंने यूनुस से, और उन्होंने इब्न शिहाब से रिवायत किया।

Abu Hurairah (Razi Allahu Anhu) ne kaha jab (Surah Shu'ara ki) yeh aayat Allah ta'ala ne utaari "Aur apne nazdeek naate waalon ko Allah ke azaab se dara" to Rasool Allah ﷺ ne farmaya: "Quraish ke logon! Ya aisa hi koi aur kalma, Tum log apni-apni jaano ko (nek aamaal ke badal) mol le lo (bacha lo), Main Allah ke saamne tumhaare kuch kaam nahi aane ka (Yaani iski marzi ke khilaaf main kuch nahi kar-sakne ka). Abdul Manaf ke beton! Main Allah ke saamne tumhaare kuch kaam nahi aane ka. Abbas Abdul Muttalib ke bete! Main Allah ke saamne tumhaare kuch kaam nahi aane ka. Safiyyah meri phuphi! Allah ke saamne tumhaare kuch kaam nahi aane ka. Fatimah! Beta tu chaahe mera maal mangle, Lekin Allah ke saamne tere kuch kaam nahi aane ka." Abu al-Yaman ke saath hadees ko Asbagh ne bhi Abdullah bin Wahb se, Unhone Yunus se, Unhone Ibn Shihab se riwaayat kiya.

(स़ही़ह़ बुख़ारी: 2753)

सीधा रास्ता रसूलुल्लाह: ﷺ का रास्ता!

عَنْ جَابِرٍ قَالَ كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَطَّ خَطًّا هَكَذَا أَمَامَهُ فَقَالَ هَذَا سَبِيلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَخَطَّيْنِ عَنْ يَمِينِهِ وَخَطَّيْنِ عَنْ شِمَالِهِ قَالَ هَذِهِ سَبِيلُ الشَّيْطَانِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ فِي الْخَطِّ الْأَسْوَدِ ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है के एक मर्तबा हम लोग नबी ﷺ के पास बैठे हुवे थे, नबी ﷺ ने अपने सामने एक लकीर (line) खींच कर फ़रमाया, येह अल्लाह: का रास्ता है, फिर दो-दो लकीरें (lines) इसके दायें बायें खींच कर फ़रमाया, के यह शैत़ान का रास्ता है, फिर दरमियान वाली लकीर (line) पर हाथ रखकर यह आयत तिलावत फ़रमाई के, यह मेरा सीधा रास्ता है, इसी की इत्तेबा करो, दूसरे रास्तों के पीछे ना - चलो वर्ना तुम सीधे रास्ते से भटक जाओगे, यही अल्लाह: की तुम्हें वस़ीयत है, ताके तुम मुत्तक़ी बन जाओ.

Hazrat Jabir (Razi Allahu Anhu) se marwi hai keh, Ek martaba ham log Nabi ﷺ ke paas baithey huwe they, Nabi ﷺ ne apne saamne ek lakeer (line) kheench kar farmaya, Yeh Allah ka raasta hai, Phir do-do lakeerein (lines) iske daayein-baayein kheench-kar farmaya Keh, Yeh Shaitaan ka raasta hai, Phir darmiyaan waali lakeer (line) par haath rakh-kar yeh aayat tilaawat farmaayi keh, Yeh mera seedha raasta hai, isi ki ittebaa karo, Doosre raaston ke peeche na - chalo, Warna tum seedhe raaste se bhatak jaaoge, Yaahi Allah ki tumhein waseeyat hai, taake tum muttaqi ban-jaao.

(मुसनद अह़मद : 15351)

वज़ाह़त : नबी ﷺ ने यह बता दिया है मेरे बताये हुवे रास्ते पर चलो तो कभी गुमराह नहीं होगे और दूसरे दायें बायें रास्तों पर चलोगे तो ये रास्ते तुम को गुमराह कर देंगे अल्लाह: और उसके रसूल ﷺ की इत़ाअ़त करो इसके अलावा दूसरों की इत़ाअ़त करोगे तो गुमराही में पढ़ जाओगे. हर गुमराहों का ठिकाना जहन्नुम है.
क़ुरआन अह़ादीष ही सीधा रास्ता।

अल्लाह: की नज़र में कौन नेक है, स़िर्फ़ अल्लाह: जानता है!

حَدَّثَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ يَنْزِلُ إِلَى الْعِبَادِ لِيَقْضِيَ بَيْنَهُمْ وَكُلُّ أُمَّةٍ جَاثِيَةٌ فَأَوَّلُ مَنْ يَدْعُو بِهِ رَجُلٌ جَمَعَ الْقُرْآنَ، وَرَجُلٌ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَرَجُلٌ كَثِيرُ الْمَالِ، فَيَقُولُ اللهُ لِلْقَارِئِ: أَلَمْ أُعَلِّمْكَ مَا أَنْزَلْتُ عَلَى رَسُولِي؟ قَالَ: بَلَى يَا رَبِّ، قَالَ: فَمَاذَا عَمِلْتَ فِيمَا عُلِّمْتَ؟ قَالَ: كُنْتُ أَقُومُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ، فَيَقُولُ اللهُ لَهُ: كَذَبْتَ، وَتَقُولُ لَهُ الْمَلَائِكَةُ: كَذَبْتَ، وَيَقُولُ اللهُ لَهُ: بَلْ أَرَدْتَ أَنْ يُقَالَ: إِنَّ فُلَانًا قَارِئٌ فَقَدْ قِيلَ ذَاكَ، وَيُؤْتَى بِصَاحِبِ الْمَالِ فَيَقُولُ اللهُ لَهُ: أَلَمْ أُوَسِّعْ عَلَيْكَ حَتَّى لَمْ أَدَعْكَ تَحْتَاجُ إِلَى أَحَدٍ؟ قَالَ: بَلَى يَا رَبِّ، قَالَ: فَمَاذَا عَمِلْتَ فِيمَا آتَيْتُكَ؟ قَالَ: كُنْتُ أَصِلُ الرَّحِمَ وَأَتَصَدَّقُ، فَيَقُولُ اللهُ لَهُ: كَذَبْتَ، وَتَقُولُ لَهُ الْمَلَائِكَةُ: كَذَبْتَ، وَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: بَلْ أَرَدْتَ أَنْ يُقَالَ: فُلَانٌ جَوَادٌ فَقَدْ قِيلَ ذَاكَ، وَيُؤْتَى بِالَّذِي قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَيَقُولُ اللهُ لَهُ: فِي مَاذَا قُتِلْتَ؟ فَيَقُولُ: أُمِرْتُ بِالْجِهَادِ فِي سَبِيلِكَ فَقَاتَلْتُ حَتَّى قُتِلْتُ، فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى لَهُ: كَذَبْتَ، وَتَقُولُ لَهُ الْمَلَائِكَةُ: كَذَبْتَ، وَيَقُولُ اللهُ: بَلْ أَرَدْتَ أَنْ يُقَالَ: فُلَانٌ جَرِيءٌ، فَقَدْ قِيلَ ذَاكَ، ثُمَّ ضَرَبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رُكْبَتِي، فَقَالَ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أُولَئِكَ الثَّلَاثَةُ أَوَّلُ خَلْقِ اللهِ تُسَعَّرُ بِهِمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

हज़रत अबू हुरैरा:, (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह: ﷺ ने मुझ से यह हदीष बयान की है: "क़ियामत के दिन जब हर उम्मत घुटनों के बल पड़ी होगी तो अल्लाह तआला अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसले के लिए नुज़ूल फ़रमाएगा, फिर उस वक़्त फ़ैसले के लिए सबसे पहले ऐसे शख़्स को बुलाया जाएगा जो क़ुरआन का हाफ़िज़ होगा, दूसरा शहीद होगा और तीसरा मालदार होगा। अल्लाह तआला हाफ़िज़-ए-क़ुरआन से कहेगा : क्या मैंने तुझ को अपने रसूल ﷺ पर नाज़िल की हुई किताब की तअलीम नहीं दी थी? वह कहेगा : बिल्कुल ऐ मेरे रब! अल्लाह: तआला फ़रमाएगा : जो इल्म तुझे सिखाया गया उसके मुताबिक़ तूने क्या अमल किया? वह कहेगा : मैं इस क़ुरआन के ज़रिऐ रात-दिन तेरी इबादत करता था। अल्लाह: तआला फ़रमाएगा : तूने झूठ कहा और फ़रिश्ते भी इस से कहेंगे कि तूने झूठ कहा। फिर अल्लाह: तआला कहेगा: (क़ुरआन सीखने का तेरा मक़सद यह था कि लोग तुझे क़ारी कहें, सो तुझे क़ारी कहा गया।) फिर स़ाहिब -ए-माल को पेश किया जाएगा और अल्लाह: तआला उस से पूछेगा : क्या मैंने तुझे हर चीज़ की वुसअत (ख़ुशहाली) न दे रखी थी, यहाँ तक कि तुझे किसी का मोहताज नहीं रखा? वह अर्ज़ करेगा: यक़ीनन ऐ मेरे रब! अल्लाह: तआला फ़रमाएगा: मैंने तुझे जो चीज़ें दी थीं, उन में तूने क्या अमल किया? वह कहेगा: स़िल-ए-रहमी (रिश्तेदारी निभाना) करता था और स़दक़ा व ख़ैरात करता था। अल्लाह: तआला फ़रमाएगा: तूने झूठ कहा और फ़रिश्ते भी उसे झुटलाएँगे, फिर अल्लाह: तआला फ़रमाएगा : बल्कि तू यह चाहता था कि तुझे 'सख़ी' कहा जाए, सो तुझे सख़ी कहा गया। इस के बाद शहीद को पेश किया जाएगा, अल्लाह: तआला उस से पूछेगा : तुझे किस लिए क़त्ल किया गया? वह अर्ज़ करेगा: मुझे तेरी राह में जिहाद का हुक्म दिया गया, चुनाँचे मैंने जिहाद किया यहाँ तक कि शहीद हो गया। अल्लाह: तआला उस से कहेगा: तूने झूठ कहा। फ़रिश्ते भी उसे झुटलाएँगे। फिर अल्लाह: तआला फ़रमाएगा: तेरा मक़स़द यह था कि तुझे बहादुर कहा जाए, सो तुझे कहा गया। फिर रसूलुल्लाह: ﷺ ने मेरे नानो (सीने) पर अपना हाथ मारकर फ़रमाया: अबू हुरैरा: ! यही वह पहले तीन शख़्स हैं जिन से क़ियामत के दिन जहन्नुम की आग भड़काई जाएगी।"

Hazrat Abu Hurairah (Razi Allah Anhu) bayaan karte hain keh, Rasool Allah ﷺ ne mujh se ye hadees bayaan ki: "Qayamat ke din jab har ummat ghutno ke bal padi hogi toh, Allah ta'ala apne bandon ke darmiyaan faisle ke liye nuzool farmayega, Phir us waqt faisle ke liye sabse pehle aise shakhs ko bulaaya jaayega, Jo Qur'an ka Hafiz hoga, Doosra Shaheed hoga aur teesra Maldaar hoga. Allah ta'ala Hafiz-e-Qur'an se kahega: Kya maine tujhe apne Rasool par naazil-kardah kitaab ki taleem nahi di thi? Woh kahega: Yaqeenan aye mere Rabb! Allah ta'ala farmayega: Jo ilm tujhe sikhaaya gaya uske mutaabiq tune kya amal kiya? Woh kahega: Main is Qur'an ke zariye raaton din teri ibaadat karta tha. Allah farmayega: Toone jhoot kaha, Aur Farishte bhi kahenge ke toone jhoot kaha. Phir Allah kahega: (Qur'an seekhne se) tera maqsad ye tha keh, Log tujhe Qaari kahein, So tujhe Qaari kaha gaya. Phir sahib-e-maal ko pesh kiya jaayega, Aur Allah ussey poochega: Kya maine tujhe har-cheez ki wus'at na de rakhi thi, Yahan tak ke tujhe kisi ka mohtaaj nahi rakha? Woh arz karega: Yaqeenan mere Rabb! Allah farmayega: Maine tujhe jo cheezein di thi unmein kya amal kiya? Woh kahega: Sila-rehmi karta tha aur sadaqah-o-khairaat karta tha. Allah farmayega: Tune jhoot kaha, Aur Farishte bhi usey jhut'laayenge. Phir Allah farmayega: balke tum ye chahte they keh, Log tumhein Sakhi kahan jaaye, So tujhe Sakhi kaha gaya. Iske baad Shaheed ko pesh kiya jaayega, Allah ussey poochega: Tujhe kis liye qatal kiya gaya? Woh arz karega: Mujhe teri raah mein jihaad ka hukum diya gaya, Chunancha maine jihaad kiya yahan tak ke Shaheed ho gaya. Allah issey kahega: Toone jhoot kaha, Aur Farishte bhi isey jhut'layenge. Phir Allah farmayega: Tera maqsad ye tha keh tujhe Bahaddur kaha jaaye, So tujhe kaha gaya."Phir Rasool Allah ﷺ ne mere zaano par haath maar kar farmaya: "Abu Hurairah! Yahi woh pehle teen shakhs hain jinse Qayamat ke din Jahannum ki aag bhad'kaayi jaayegi."

(सुनन-ए-तिर्मिज़ी : 2382)

हुक्म-ए-इलाही!

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى إِثْمًا عَظِيْمًا

यक़ीनन अल्लाह: तआ़ला अपने साथ शरीक किये जाने को नहीं बख़्शता और इसके सिवा जिसे चाहे बख़्श देता है। और जो अल्लाह: तआ़ला के साथ शरीक मुक़र्रर करे, उसने बहुत बड़ा गुनाह और बहुतान बाँधा।

Yaqeenan Allah ta'ala apne saath shareek kiye jaane ko nahi bakhshta aur iske siwa jise chaahe bakhsh-deta hai. Aur jo Allah ta'ala ke saath shareek muqarar kare, Usne bahot badaa gunaah aur bohtaan bandha.

(सूर: निसा 4, आयत 48)

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ أَطَاعَ اللّٰهَ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ أَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا

इस रसूल ﷺ की जो इत़ाअ़त करे, उसने अल्लाह: तआ़ला की फ़रमा-बरदारी की। और जो मुँह फेर ले, तो हमने आपको कुछ उन पर निगेहबान बनाकर नहीं भेजा।

Is Rasool ﷺ ki jo ita'at kare, Usne Allah ta'ala ki farma-bardaari ki. Aur jo munh pherle, to hamne aapko kuch unpar nigehbaan banaakar nahi bheja

(सूर: निसा 4, आयत 80)

قُلْ إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ أُشْرِكَ بِهٖ إِلَيْهِ أَدْعُوْا وَإِلَيْهِ مَاٰبِ

आप ऐ़लान कर दीजिये कि, मुझे तो स़िर्फ़ यही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह: की इ़बादत करूँ और उसके साथ शरीक न करूँ। मैं उसी की त़रफ़ बुला रहा हूँ और उसी की जानिब मेरा लौटना है।

Aap elaan kar dijiye keh, Mujhe to sirf yeh hi hukm diya gaya hai keh, main Allah ki ibaadat karun aur uske saath shareek na-karun. Main usi ki taraf bulaa raha hun aur usi ki jaanib mera lautna hai.

(सूर: रअ़द 13, आयत 36)

जब भी अल्लाह: का ज़िक्र होता है मोमिनों के दिल काँप जाते हैं

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ
عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٢﴾

बस ईमान वाले तो ऐसे होते हैं के, जब अल्लाह: तआला का ज़िक्र आता है तो उनके क़ुलूब (दिल) डर जाते हैं, और जब अल्लाह: तआला की आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो, वोह आयतें उनके ईमान को और ज़्यादा:कर देती हैं, और वोह लोग अपने रब पर तवक्कुल करते हैं.

Bas Eemaan waale toh aise hote hain keh, Jab Allah ta'ala ka zikr aata hai toh unke quloob (dil) darr jaate hain, Aur jab Allah ta'ala ki Aayatein unhein padh-kar sunaayi jaati hain toh, Woh Aayatein unke Eemaan ko aur zyaada kar deti hain, Aur woh log apne Rabb par tawakkul karte hain.

(सूर: अनफ़ाल, 8 आयत 2)

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ

जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने उनको जो कुछ दिया है वोह उस में से ख़र्च करते हैं.

Jo ke namaaz ki pa-bandi karte hain aur hamne unko jo kuch diya hai woh us mein se kharch karte hain.

(सूर: अनफ़ाल 8, आयत 3)

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

सच्चे ईमान वाले येह लोग हैं, इनके लिये बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और मग़्फ़िरत और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है.

Sachche Eemaan waale yeh log hain, Inke liye bade darje hain unke Rabb ke paas, Aur maghfirat aur izzat ki rozi hai.

सूरह अल-अन्फ़ाल 8– आयत 4

अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह़मतुल्लाह:) का पैग़ाम।

ويلك! ماتستحي تطلب من غير الله عزوجل وهو أقرب إليك من غيره

लअ़नत हो तुम पर। क्या तुम्हें शर्म नहीं आती अल्लाह: के सिवा औरों से अपनी ज़रूरतें मांगने के लिए, जबकि वो तुमसे औरों से ज़्यादा: क़रीब है।

Laanat ho tumpar. Kya tumhein sharam tak nahi aati Allah ke siwa auron se apni zarooraton ko maangne ke liye. Jab ke wo tumse auron se zyaada nazdeek hai.

(फ़तह़ अल-रब्बानी, पेज 159)

لا تدع مع الله أحدا كما قال الله عزوجل وَأَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللّٰهِ أَحَدًا

अल्लाह: के सिवा किसी और को मत पुकारो, जैसे कि मस्जिद सिर्फ़ अल्लाह: के लिए होती है, इसलिए अल्लाह: के साथ किसी और को मत पुकारो।

Allah ke siwa kisi aur ko mat pukaaro, Jaise ki Masjid sirf Allah ke liye hoti hai, Isi liye Allah ke saath kisi aur ko mat pukaaro.

(फ़तह़ अल-रब्बानी, पेज 184)

لاتسئل الخلق شئياً فانهم عجزة فقراء لايملكون لانفسهم ولالغيرهم ضراً ولا نفعا

मख़लूक़ से कुछ भी मत मांगो, उनके पास त़ाक़त नहीं है और वो ख़ुद ज़रूरतमंद हैं। वो अपने लिए या किसी के लिए कोई फ़ायदा: या नुक़सान पहुँचाने का कोई इख़्तियार नहीं रखते।

Makhlooq se kuch bhi mat-maango, Unke pas taaqat nahi hai aur khudd zaroorat-mand hai. Wo apne liye ya kisi ke liye koi faida ya nuksaan pahunchaane ka koi ikhtiyaar nahi rakhte.

(फ़तह़ अल-रब्बानी, मजलिस नं. 50, पेज 209)

इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़मतुल्लाह) के अ़क़ीदे और पैरोक़ारों के अ़क़ीदे में फ़र्क़!

इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़मतुल्लाह) का अ़क़ीदा

यहूद-वा-नस़ारा अपने मौलवी और दरवेशों का कहा मानते थे, इसलिये अल्लाहः ने इन्हें मुश्रिक क़रार दिया। और मोमिनों को हुक्म दिया कि बड़ों का क़ौल मत पूछ, बल्कि यह पूछो **अल्लाहः और इसके रसूल ﷺ का क्या हुक्म है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : आ़लमगीरी जिल्द - 1 पेज नम्बर : 12]

वली की क़बर बुलन्द मकान बनाना और चिराग़ जलाना **बिद्अत-वा-हराम है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : आ़लमगीरी जिल्द - 1 पेज नम्बर : 12]

क़बर को बोसा देना (चूमना) ह़राम है, **यह नस़ारा की आ़दत है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : दुर्र-ए-मुख़्तार जिल्द - 4 पेज नम्बर : 230]

अंबिया-वा-औलिया के क़ब्रों को सजदाः करना, त़वाफ़ करना, नज़राने चढ़ाना **ह़राम-व-कुफ़्र है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : दुर्र-ए-मुख़्तार जिल्द - 1 पेज नम्बर : 53]

जो वली की क़ब्र की ज़ियारत के लिये सफ़र करता है, **वह जाहिल-व-काफ़िर है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : दुर्र-ए-मुख़्तार जिल्द - 2 पेज नम्बर : 529]

ग़ैरुल्लाहः की मन्नत मानना शिर्क है और इस **मन्नत का खाना ह़राम है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : बहिश्ती ज़ेवर बाब - 3 पेज नम्बर : 65]

जिस जानवर पर ग़ैरुल्लाहः का नाम पुकारा गया हो और ज़बह़ किये वक़्त **"बिस्मिल्लाहः अल्लाहु अकबर"** कहा हो तो, **वह ज़बह़ ह़राम है।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : दुर्र-ए-मुख़्तार जिल्द - 1 पेज नम्बर : 249 & 273]

दुआ, बा-ह़क़ नबी और वली (बशर्ते वसीला) माँगना मक़रूह है इसलिये कि **मख़लूक़ का कुछ ह़क़ अल्लाह पर नहीं।**

[ह़वाला फ़िक़: ह़नफ़ी : हिदाया पेज नम्बर : 226]

ह़दीष-ए-क़ुदसी!

عَنْ أَبِي ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا رَوَى عَنِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ يَا عِبَادِي إِنِّي حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلَى نَفْسِي وَجَعَلْتُهُ بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا فَلَا تَظَالَمُوا يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلَّا مَنْ هَدَيْتُهُ فَاسْتَهْدُونِي أَهْدِكُمْ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ جَائِعٌ إِلَّا مَنْ أَطْعَمْتُهُ فَاسْتَطْعِمُونِي أُطْعِمْكُمْ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ عَارٍ إِلَّا مَنْ كَسَوْتُهُ فَاسْتَكْسُونِي أَكْسُكُمْ يَا عِبَادِي إِنَّكُمْ تُخْطِئُونَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَأَنَا أَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا فَاسْتَغْفِرُونِي أَغْفِرْ لَكُمْ يَا عِبَادِي إِنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوا ضَرِّي فَتَضُرُّونِي وَلَنْ تَبْلُغُوا نَفْعِي فَتَنْفَعُونِي يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَتْقَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا زَادَ ذَلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي شَيْئًا يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِمَّا عِنْدِي إِلَّا كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ الْبَحْرَ يَا عِبَادِي إِنَّمَا هِيَ أَعْمَالُكُمْ أُحْصِيهَا لَكُمْ ثُمَّ أُوَفِّيكُمْ إِيَّاهَا فَمَنْ وَجَدَ خَيْرًا فَلْيَحْمَدِ اللهَ وَمَنْ وَجَدَ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَا يَلُومَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ قَالَ سَعِيدٌ كَانَ أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلَانِيُّ إِذَا حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ جَثَا عَلَى رُكْبَتَيْهِ

आँ ह़ज़रतअबू ज़र (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने नबी ﷺ से एक ऐसी रिवायत बयान की जो आप ने अल्लाह: तबारक व तआ़ला से बयान की, अल्लाह: तआ़ला ने फरमाया : ”मेरे बन्दो! मैंने ज़ुल्म करना अपने ऊपर ह़राम किया है और तुम्हारे दरमियान भी उसे ह़राम क़रार दिया है, इसलिए तुम एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो। मेरे बन्दो! तुम सब के सब गुमराह हो, सिवाए उस के जिसे मैं ह़िदायत दे दूँ, इसलिए मुझ से ह़िदायत माँगो, मैं तुम्हें ह़िदायत दूँगा। मेरे बन्दो! तुम सब के सब भूखे हो, सिवाए उस के जिसे मैं खिलाऊँ, इस लिए मुझ से खाना माँगो, मैं तुम्हें खिलाऊँगा। मेरे बन्दो! तुम सब के सब नंगे हो, सिवाए उस के जिसे मैं लिबास़ पहनाऊँ, लिहाज़ा मुझ से लिबास़ माँगो मैं तुम्हें लिबास़ पहनाऊँगा। मेरे बन्दो! तुम दिन रात गुनाह करते हो और मैं ही सब के सब गुनाह मआ़फ़ करता हूँ, सो मुझ से मग़फ़िरत माँगो, मैं तुम्हारे गुनाह मआ़फ़ करूँगा। मेरे बन्दो! तुम कभी मुझे नुक़स़ान पहुँचाने की त़ाक़त नहीं रखोगे कि मुझे नुक़सान पहुँचा सको, न कभी मुझे फ़ायदा: पहुँचाने के क़ाबिल होगे कि मुझे फ़ायदा: पहुँचा सको। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले वाले और तुम्हारे बाद वाले और तुम्हारे इन्सान और तुम्हारे जिन्न सब मिल कर तुम में से एक इन्तहाई मुत्तक़ी इन्सान के दिल के मुत़ाबिक़ हो जाएँ तो इस से मेरी बादशाहत में कोई इज़ाफ़ा नहीं हो सकता। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले वाले और तुम्हारे बाद वाले और तुम्हारे इन्सान और तुम्हारे जिन्न सब मिल कर तुम में से सब से फ़ाजिर आदमी के दिल के मुत़ाबिक़ हो जाएँ तो इस से मेरी बादशाहत में कोई कमी नहीं होगी। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे पहले और तुम्हारे पिछले और तुम्हारे इन्सान और तुम्हारे जिन सब मिल कर एक खुले मैदान में खड़े हो जाएँ और मुझ से माँगें और मैं हर एक को उसकी माँगी हुई चीज़ अ़त़ा कर दूँ तो इस से जो मेरे पास है,

Continue in next page in Roman

उस में इतना भी कम नहीं होगा जो उस सुई से (कम होगा) जो समुन्दर में डाली (और निकाल ली) जाए।" सईद ने कहा : अबू इदरीस में ख़ौलानी जब ये ह़दीष बयान करते तो अपने घुटनों के बल बैठ जाते।

Abu dhar (Razi Allah Anhu) se aur unhone Nabi ﷺ se ek aisi rivayat bayaan ki jo, Aap ne Allah tabarak-o-ta'ala se bayaan ki, Allah ta'ala ne farmaya: Mere bandon maine zulm karna apne upar haraam kiya hai, Aur tuhmaare darmiyaan bhi ise haraam qaraar diya hai, Is liye tum ek doosre par zulm na karo, Mere bando tum sabke sab gumrah ho, Siwaaye uske jise main Hidaayat de dun, Is liye mujse Hidaayat maango, Main tumhein Hidaayat dunga, Mere bandon tum sabke sab bhooke ho, Siwaaye uske jise main khilaao, Is liye mujse khaana maango, Main tumhe khilaunga, Mere bando tum sabke sab nange ho, Siwaaye uske jise main libaas pahenaaon, Lehaaza mujhse libaas maango, Main tumhein libaas pahenaunga, Mere bando tum din raat gunah karte ho, Aur main hi sabke sab gunah maaf karta hun, So mujse maghfirat maango, Main tumhaare gunah maaf karunga, Mere bando tum kabhi mujhe nuqsaan pahunchane ki taaqat nahi rakhoge keh, Mujhe nuqsaan pahuncha sako, Na kabhi mujhe faida pahunchane ke qaabil honge keh, Mujhe faida pahunchaa-sako, Mere bandon! Agar tumhaare pahele waale aur tumhaare baad waale aur tumhaare Insaan aur tumhaare Jinn sab milkar tum mein se ek intehaayi muttaqi Insaan ke dil ke mutaabiq ho jaaye toh, Ussey meri badshahat mein koi izaafa nahi ho sakta Mere bandon! Agar tumhaare pahle waale aur tumhaare baad waale aur tumhaare Insaan aur tumhaare Jinn sab milkar tum mein se sab se fajir aadmi ke dil ke mutaabiq ho-jaaye toh, Ussey mere badshahat mein koi kami nahi hogi Mere bandon! Agar tumhaare pahle aur tumhaare pichle aur tumhaare Insaan aur tumhaare Jinn sab milkar ek khule maidaan mein khade ho-jaaye aur mujhe se maange aur main har ek ko uske maangi huwi cheez ataa kardun toh, Ussey jo mere paas hai, Usme itna bhi kam nahi hoga jo us sui (needle) se (kam hoga) jo samandar mein daali (aur nikaal li) jaaye. Sayeed ne kaha, abu idris khaulani jab ye hadees bayaan karte to apne ghutnao ke bal bait jaate

(स़ह़ीह़ मुस्लिम : 6572)

हक़ जमाअत कौनसी है?

حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ ، عَنْ قَيْسٍ ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، قَالَ : لَا يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ .

नबी -ए- करीम ﷺ ने फ़रमाया : मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा (इस में इल्मी और दीनी ग़लबा भी शामिल है), यहाँ तक के क़ियामत आ जायेगी. और वोह ग़ालिब ही रहेंगे.

Nabi-e-Kareem ﷺ ne farmaya: Meri ummat ka ek giroh hamesha ghaalib rahega (is mein ilmi aur deeni ghalba bhi shaamil hai) yahan tak keh Qayamat aa-jaayegi aur woh ghaalib hi rahenge.

(सहीह बुख़ारी: 7311)

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَبِي أَسْمَاءَ الرَّحَبِيِّ، عَنْ ثَوْبَانَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي الْأَئِمَّةَ الْمُضِلِّينَ . (حديث مرفوع) (حديث موقوف) قَالَ: قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي عَلَى الْحَقِّ ظَاهِرِينَ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ يَخْذُلُهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ ، قَالَ أَبُو عِيسَى: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ، سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ، يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ الْمَدِينِيِّ، يَقُولُ: وَذَكَرَ هَذَا الْحَدِيثَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ عَلَى الْحَقِّ فَقَالَ عَلِيٌّ: هُمْ أَهْلُ الْحَدِيثِ.

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अपनी उम्मत पर गुमराह कुन ईमामों (हाकिमों) से डरता हूँ." 1, नीज़ फ़रमाया : "मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा हक़ पर ग़ालिब रहेगी, उनकी मदद न करने वाले उन्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे यहाँ तक के अल्लाह: का हुकुम (क़यामत) आ जाये.

"इमाम तिर्मिज़ी कहते हैं: 1- यह हदीष हसन सहीह है, 2- मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी को कहते सुना के मैंने अली बिन मदीनी को कहते सुना के उन्होंने नबी-ए-करीम ﷺ की यह हदीष "मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा हक़ पर ग़ालिब रहेगी" ज़िक्र की और कहा: वोह अहले हदीष हैं.

Rasool Allah ﷺ ne farmaya: "Main apni ummat par gumraah kun imaamo (haakimo) se darta hun." 1, neez farmaya: "Meri ummat ki ek jamaat hamesha haqq par ghaalib rahegi, Unki madad na-karne waale unhein koi nuqsaan nahi pahuncha sakenge, Yahan tak keh Allah ka hukum (Qayamat) aa-jaaye.

"Imaam Tirmizi kehte hain: 1- Yeh Hadees hasan sahih hai, 2- Maine Muhammad bin Ismail Bukhari ko kehte suna ke maine Ali bin Madini ko kehte suna ke unhone Nabi-e-Kareem ﷺ ki yeh Hadees "Meri ummat ki ek jamaat hamesha haqq-par ghaalib rahegi" Zikar ki aur kaha: woh Ahl-e-Hadees hain.

(सुनन तिर्मिज़ी : 2229)

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

(सूर: अल अअ़राफ़ 7, आयत 164)

और वोह वक़्त उन्हें याद दिलाओ जब उन्हीं के एक गिरोह ने दूसरे गिरोह से कहा था कि : तुम उन लोगों को क्यूँ नस़ीह़त कर रहे हो, जिन्हें अल्लाह: या तो हलाक करने वाला है या कोई सख़्त क़िस्म का अ़ज़ाब देने वाला है? दूसरे गिरोह के लोगों ने कहा के : यह हम इसलिये करते हैं, ताके तुम्हारे रब्ब के हुज़ूर बरी उज़ ज़िम्मा हो सकें, और शायद इस नस़ीह़त से यह लोग परहेज़गारी इख़्तियार करलें.

कुछ लोग आप को ह़क़ बात करने से रोकेंगे, कहेंगे आप अपना काम करो, हम को समझाने के लिये आप को किस ने कहा है? अल्लाह: ने यह हुकुम दिया है, तुम में से एक जमाअ़त ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को बुरे कामों से रोके अच्छे कामों का हुकुम दें और यही लोग निजात पाने वाले हैं.

(सूर: आल इ़मरान 3, आयत 104)

तुम बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों को भलाई का हुकुम देते हो और बुराई से रोकते हो।

(सूर: आल इ़मरान 3, आयत 110)

अल्लाह: तअ़ाला ने हमको यह हुकुम दिया है हम ख़ुद कि इस़्लाह़ करें और लोगों की इस़्लाह़ करें हर मुसलमान की यह ज़िम्मेदारी है कि, वोह लोगों को इस्लाम की त़रफ़ बुलाये और शिर्क-ओ-बिदअ़त करने वालों को तौह़ीद की दअ़वत दें और शिर्क-ओ-बिदअ़त कुफ़्र से रोकें, वर्ना अल्लाह: अ़ज़ाब के लिये तैयार रहे और अल्लाह: ने कहा :

ज़माने की क़सम इन्सान दर ह़क़ीक़त नुक़्सान में है, सिवाये उन लोगों के जो ईमान लाये और नेक अ़ामाल करें और एक दूसरे को ह़क़ बात की नस़ीह़त करें और एक दूसरे को स़ब्र की नस़ीह़त करें.

(अल क़ुरआन सूर: अ़स़्र 103)

याद रहे दअ़वत ए तौह़ीद के काम में तकलीफ़ें आएगी, लेकिन रुकना नहीं है. अल्लाह: का कलाम प्यारे नबी ﷺ का फ़रमान लोगों तक पहुंचाना है, समझाना है और ऐसा करने वालों पर अल्लाह: की मदद हमेशा रहेगी.

हर मुश्किल के बाद आसानी है, दअ़वत ए तौह़ीद के रास्ते में नबियों को भी आज़माइशों का सामना करना पड़ा है, अल्लाह: ने कहा :

क्या तुम जन्नत में यूं ही चले जाओगे? जब कि तुम पर कोई मुस़ीबत आज़माइश नहीं है, तुम से पहले के लोगों पर सख़्तियां मुस़ीबतें आई.

(सूर: बक़रा: - 214)

रसूल अल्लाह: ﷺ ने फ़रमाया: इस ज़ात की क़सम है, जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम मअ़रूफ़,यअ़नि भलाई का हुकुम दो मुन्कर यअ़नि बुराई से रोको वर्ना क़रीब है फिर अल्लाह: तअ़ाला का अ़ज़ाब तुम पर आएगा तुम दुअ़ायें करोगे अल्लाह: तुम्हारी दुअ़ायें क़ुबूल नहीं करेगा.

(सुनन तिर्मिज़ी : 2169)

दअ़वत और इस्लाह़ के लिये कुछ ज़रूरी क़ुरआनी ह़वाले (References) टॉपिक

Sl No.	Topic:	Surah and Verses
1	अल्लाह: के बराबर कोई नहीं है और उसका कोई शरीक नहीं है	सूर: बक़रा: 2:165, 255; सूर: अंम्बिया 21:21-25; ह़श्र 59:22-24; सूर: इख़लास़ 112:1-4.
2	अल्लाह: को छोड़ कर उसके बन्दों को मत पुकारो	सूर: अअ़राफ़ 7:194-197; सूर: यूनुस 10:28-36; सूर: नह़ल 16:17-22; सूर: इसरा 17:56-57; सूर: कहफ़ 18:102; सूर: फ़ुर्क़ान 25:3.
3	अल्लाह: शिर्क करने वालों को कभी मआ़फ़ नहीं करेगा	सूर: अन्-निसा 4:48, 116.
4	उनके शरीक अपनी इ़बादत किये जाने का इन्कार, देंगे	सूर: यूनुस 10:28-30; सूर: इब्राहीम 14:4-6; सूर: नह़ल 16:86-87; सूर: फ़ुर्क़ान 25:17-19; सूर: क़स़स़ 28:62-65; सूर: रूम 30:12-14.
5	अक्सर लोग ईमान लाने के बाद भी शिर्क करते हैं	सूर: यूसुफ़ 12:106.
6	अगर कोई नबी भी शिर्क करता, तो उसके आ़माल बर्बाद हो जाते	सूर: अन्आ़म 6:83-88; सूर: इसरा 17:39; सूर: अज़्-ज़ुमर 39:65.
7	बुतों (मक़बरों) की मुजाविरी	सूर: अअ़राफ़ 7:138; सूर: शुअ़रा 26:71
8	अल्लाह: ही मुस़ीबतें दूर करता है	सूर: अन्आ़म 6:17; सूर: यूनुस 10:106-107; सूर: अह़ज़ाब 33:17; सूर: मुह़म्मद 47:28
9	सब काम करने वाला स़िर्फ़ अल्लाह: है	सूर: शूरा 42:28.
10	शिफ़ा स़िर्फ़ अल्लाह: देता है	शूअ़रा 26:80.
11	रिज़्क़ स़िर्फ़ अल्लाह: देता है	सूर: रअ़द 13:26; सूर: नह़ल 16:73-74; सूर: इसरा 17:30; अन्कबूत 29:62; सूर: रूम 30:37; सूर: सबा 34:36, 39; सूर: फ़ात़िर 35:3; सूर: शूरा 42:12, 19; सूर: मुल्क 67:21.
12	सबके सब अल्लाह: के सामने फ़क़ीर और मुहताज हैं	सूर: फ़ात़िर 35:15.
13	अल्लाह: हमसे क़रीब है	सूर: बक़रा: 2:186; सूर: क़ाफ़ 50:16.
14	इन्सान अल्लाह: की इ़बादत के लिये पैदा हुवे हैं	सूर: ज़ारियात 51:56.
15	स़िर्फ़ अल्लाह: से ही दुआ़ मांगो और वही दुआ़ क़ुबूल करता है	सूर:बक़रा: 2:186; सूर: आल इ़मरान 3:38; सूर: इब्राहीम 14:39; सूर:अंम्बिया 21:8-9,83-84;सूर: ग़ाफ़िर 40:60; सूर:शूरा 42:25-26.
16	स़िर्फ़ अल्लाह: को पुकारो	सूर: अन्आ़म 6:40-41, 52, 63-65; सूर: अ़राफ़ 7:180; सूर: यूनुस 10:22-23, 65-66; सूर: रअ़द 13:14-15; सूर: नह़ल 16:52-56; सूर: इसरा 17:110; सूर: कहफ़ 18:28, 52; सूर: ह़ज्ज 22:73-74; सूर: नमल 27:62-63; सूर: अन्कबूत 29:41-42; सूर: रूम 30:33-35; सूर: लुक़मान 31:30-32; सूर: सजदा: 32:15-16; सूर: सबा 34:22-23; सूर: अज़्-ज़ुमर 39:8; सूर: फ़ात़िर 35:13-17; सूर: जिन्न 72:18.
17	ग़ैरुल्लाह: का वसीला तलाश करना	सूर: इसरा 17:56-57; सूर: अज़्-ज़ुमर 39:3; सूर: अह़क़ाफ़ 46:28.
18	मुर्दे या जो क़ब्रों में हैं, सुन नहीं सकते	सूर: नमल 27:80; सूर: फ़ात़िर 35:22.
19	क़यामत के दिन अपनी मर्ज़ी से कोई किसी की सिफ़ारिश नहीं कर पायेगा	सूर: बक़रा: 2:255; सूर: अन्आ़म 6:51, 70, 94; सूर: यूनुस 10:3; सूर: मरियम 19:87; सूर: त़ा-हा 20:109; सूर: अंम्बिया 21:28; सूर: सजदा: 32:4; सूर: सबा 34:23; सूर: या'सीन 36:23; सूर: अज़्-ज़ुमर 39:43-44; सूर: ग़ाफ़िर 40:18; सूर: ज़ुख़रूफ़ 43:86; सूर: नज्म 53:26; सूर: मुद्दष्षिर 74:48.
20	इन्सान वही पायेगा जिसकी कोशिश वोह करेगा	सूर: नज्म 53:38-39.

Continue in next page

दअ़वत और इस्लाह़ के लिये कुछ ज़रूरी क़ुरआनी ह़वाले (References) टॉपिक

	टॉपिक :	References (Surahs and Ayahs)
21	अल्लाह: का कोई टुकड़ा नहीं	सूर: ज़ुख़रूफ़ 43:15.
22	ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह: के पास है	सूर: आल इमरान 3:179, सूर: माइदा: 5:116, सूर: अन्‌आम 6:59, सूर: हूद 11:123, सूर: रअ़द 13:8-10, सूर: कहफ़ 18:26, सूर: नमल 27:65-66, सूर: लुक़मान31:34, सूर: ह़श्र 9:22.
23	अल्लाह: अपने रसूलों को जितना चाहता है ग़ैब का इल्म देता है	सूर: आल इमरान 3:179, सूर: हूद 11:49, सूर: यूसुफ़ 12:102 सूर: जिन्न 72:26-27.
24	कोई नबी ग़ैब नहीं जानते थे	सूर: माइदा: 5:109, 116-117, सूर: हूद 11:25-31.
25	मुहम्मद ﷺ भी ग़ैब नहीं जानते थे	सूर: आल इमरान 3:44, सूर: अन्‌आम 6:50, सूर: अ़राफ़ 7:188, सूर: अन्फ़ाल 8:60, सूर: तौबा 9:43, 94, 101, सूर: हूद 11:49, सूर:यूसुफ़ 12:3, 102, सूर: कहफ़ 23-24, सूर: अंम्बिया 21:108-109, सूर: नूर 24:19, सूर: नमल 27:6, सूर: क़सस़ 28:44-46, सूर:स़ाद 38:35-70, सूर: फ़तह़ 48:25,सूर: तह़रीम 66:3, सूर: क़लम 68:25-26 सूर: जिन्न 72:25-26.
26	मुहम्मद ﷺ अपना कोई इख़्तियार नहीं रखते थे.	सूर: अअ़राफ़ 7:188, सूर: अन्फ़ाल 8:63, सूर: यूनुस 10:49, सूर: जिन्न 72:21-22.
27	सारे रसूल बशर (इन्सान) थे	सूर: हूद 11:25-27, सूर: इब्राहीम 14:10-11, सूर: मोमिनून 23:23-24, 32-34, सूर: ह़ज्ज 22:75, सूर: शुअ़रा 26:150-154,177-186, सूर: या'सीन 36:14-17, सूर: तग़ाबुन 64:6
28	नबी ﷺ भी एक बशर और रसूल थे	सूर: इसरा 17:90-96, सूर: कहफ़ 18:110, सूर: मोमिनून 23:12, सूर: फ़ुस्सीलत 41:6.
29	अल्लाह: और उसके रसूल के मुक़ाबले में बाप दादा और बुज़ुर्गों के पीछे मत चलो	सूर: बक़रा: 2:170, सूर: माइदा: 5:104, सूर: लुक़मान 31:21, सूर: अह़ज़ाब 33:66-68,सूर: ज़ुख़रूफ़ 43:20-25, सूर: जाषिया: 45:25.
30	स़िर्फ़ गुमान और अटकलों के पीछे मत चलो	सूर: अन्‌आम 6:128.
31	अक्षरियत के पीछे मत चलो	सूर: अन्‌आम 6:116, सूर: अअ़राफ़ 7:3, 70, 71.
32	अल्लाह: अपने बन्दों में से जिसे चाहे पैग़म्बर चुन लेता है	सूर: बक़रा: 2:90, सूर: अन्‌आम 6:87, सूर: नह़ल 16:2, 120-121, सूर: मरियम 19:58.
33	रसूल ﷺ की इताअ़त ही निजात का बेहतरीन ज़रिअ़ा है	सूर: आल इमरान 3:31, 32, 12, सूर: अन्-निसा 4:59, 64, 65, 69, 80, 115, सूर: माइदा: 5:92, सूर: अन्फ़ाल 8:20, सूर: तौबा 9:24, सूर: इब्राहीम 14:43-44, सूर: नूर 24:41-44, सूर: फ़ुर्क़ान 25:27-30, सूर:अह़ज़ाब 33:36, सूर: मुह़म्मद 47:32-33, सूर: ह़ुजूरात 49:14, सूर: मुजादिला: 58:22.
34	जो अल्लाह: और उसके रसूल दे, बस उसमें ही राज़ी रहो	सूर: अह़ज़ाब 33:36, सूर: ह़श्र 59:7.
35	रसूलों से भी सवाल होंगे	सूर: अअ़राफ़ 7:6.
36	इमाम को ख़ुदा (God) मत बनाओ	सूर: तौबा 9:31.
37	मुश्रिक और काफ़िर की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ना और मग़्फ़िरत की दुआ़ करना ह़राम है	सूर: तौबा 9:84.
38	उस से ज़ालिम कौन है जिसे अल्लाह: की आयतें दिखाई जायें और वो उसे ना माने	सूर: कहफ़ 18:57, सूर: जाषिया: 45:6-8.
39	क़ुरआन में सब स़ाफ़ बयान है	सूर: अन्-निसा 4:82, 176, सूर: माइदा: 5:75, सूर: अन्‌आम 6:55, 70, 98, 104, 114, 126, सूर: अअ़राफ़ 7:174, सूर: तौबा 9:11, सूर: यूनुस 10:24, सूर: यूसुफ़ 12:1-2, 111, सूर: इब्राहीम 14:25.
40	अल्लाह: की ह़िदायत ही ह़िदायत है	सूर: बक़रा: 2:37-39, 137, सूर: माइदा: 5:49-50, सूर: अन्‌आम 6:71, 53, सूर: यूसुफ़ 12:108, सूर: इसरा (बनी इस्राईल) 17:9, सूर: ता-हा 20:122-127, सूर: क़सस़ 28:50, सूर: फ़ातिर 35:27-31, सूर: मुह़म्मद 47:2-3.

Continue in next page

दअ़वत और इस्लाह़ के लिये कुछ ज़रूरी क़ुरआनी ह़वाले (References) टॉपिक

Sl No.	Topic:	Surah and Verses
41	रसूल अल्लाह: ﷺ ही बेहतरीन आइडियल है	सूर: अह़ज़ाब 33:21.
42	नबी ﷺ ने हमसे कोई अ़मल नहीं छुपाया	सूर: अअ़राफ़ 7:194-197; सूर: यूनुस 10:28-36; सूर: नह़ल 16:17-22; सूर: इसरा 17:56-57; सूर: कहफ़ 18:102; सूर: फ़ुर्क़ान 25:3.
43	फ़िरक़ों में मत बटो	सूर: आल इ़मरान 3:19-20, 103; सूर: अन्आ़म 6:159; सूर: रूम 30:32.
44	इस्लाम में पूरी त़रह दाख़िल हो जाओ	सूर: बक़रा: 2:208, सूर: अन्-निसा 4:150-151, सूर: ह़ज्ज 22:11.
45	दलील या सनद	सूर: बक़रा: 2:111, सूर: अन्आ़म 6:81, सूर: ह़ज्ज 22:8-9, सूर: क़स़स़ 28:75, सूर: सजदा: 32:20, सूर: ग़ाफ़िर 40:35, सूर: शूरा 42:16, सूर: हुजूरात 49:6.
46	दअ़वत ए दीन	सूर: आल इ़मरान 3:104, 110, सूर: यूसुफ़ 12:108, सूर: नह़ल 16:125, सूर: फ़ुस्सीलत 41:33.
47	अल्लाह: के दीन की मदद करो तो तुम्हारी मदद होगी	सूर: ह़ज्ज 22:40, सूर: अन्कबूत 29:69, सूर: मुह़म्मद 47:7.
48	स़ब्र और षाबित क़दमी	सूर: आल इ़मरान 3:200, सूर: बक़रा: 2:48,सूर: लुक़मान 31:17.

"ह़ामिदन व मुसल्लियन अल्-क़सीम"

ह़ामिदन व मुसल्लियन अल्-क़सीम"अल्लाह: तआ़ला ने जिन्नात व इंसान को फ़ित़रत-ए-तौह़ीद पर तख़्लीक़ किया, इब्लीस और इंसान-नुमा इब्लीस ने बरगश्ता किया। अंबिया - अलैहीमुस्सलाम ने मुसलसल कोशिश की और तौहीद के परचम (झंडे) को लहराया और शिर्क को जड़ से उखाड़ फेंका । तौह़ीद व शिर्क की जंग क़दीम तरीन जंगों में से है। एक त़रफ़ तौह़ीद के शैदाई अंम्बिया के वारिष और दूसरी त़रफ़ मुश्रिक मर्दों के पुजारी। ताहनूज़ यह सिलसिला जारी है, और स़ुबह़-ए-क़यामत तक जारी रहेगा।यह अलग बात है कि जन्नत के मक़ीं तौह़ीद पर जान व माल और पूरा वक़्त रब्ब-ए-क़ायनात की ख़ुशनूदी के लिए निछावर करते रहेंगे, और जहन्नमियों का टोली शिर्क का ढिंढोरा पीटने में कसर नहीं छोड़ेगा। आपके हाथों में यह किताबचा "दअ़वत-ए-तौह़ीद" और अस़्ल उन दलाइल पर मुश्तमिल है जिन्हें मैंने ऑडियो की शक्ल में पेश किया है और मेरे ऑफ़िशियल टेलीग्राम चैनल पर मौजूद हैं। तक़रीबन पाँच साल पहले मेरे क्लासमेट उ़मर फ़ारूक़ मदनी ने ख़ुत़्बा के लिए किताबी शक्ल में पेश करने का मुत़ालिबा किया था मगर हो न सका।अल्लाहु-ल-अमरु-मिन-क़ब्लि-व-मिन-बअ़द।यह किताबचा उन तमाम ख़्वातीन व ह़ज़रात के लिए निहायत ही उ़म्दा: और मुफ़ीद तरीन है जो अंम्बिया कराम के मिशन को रज़ा-ए-इलाही के लिए आगे बढ़ाने का शौक़ व जज़्बा रखते हैं और शिर्क व बिदअ़त व ख़ुराफ़ात को बेख़-ओ-बुन से उखाड़ फेंकने का हौस़ला भी रखते हैं।अल्लाह: तआ़ला इसके मुर्त्तिब और नाशिर बरादर सैय्यद नौशाद को जज़ाए ख़ैर दे और मजीद ह़िम्मत व ह़ौस़ला से नवाज़े ताकि शिर्क व बिदअ़त का पोस्टमार्टम करते रहें और तौह़ीद व सुन्नत का प्रचार भी। त़ाहिर सनाबली, सऊ़दी अ़रब

فرض نماز کے بعد کے اذکار

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद के अज़कार!

- اَللّٰهُ اَكْبَرُ — अल्लाहु अकबर | أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ — अस्तग़्फ़िरुल्लाह: | أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ — अस्तग़्फ़िरुल्लाह: | أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ — अस्तग़्फ़िरुल्लाह: (सहीह मुस्लिम 591)

- اَللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ
  अल्लाहुम्-म-अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम तबारक्-त व ज़ल्जलालि वल इकराम (सहीह मुस्लिम 591)

- لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
  ला इलाहा इल्लाल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अ़ला कुल्लिशईन क़दीर (सहीह मुस्लिम 1338)

- اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ
  अल्लाहुम्-म-ला मानि-अ़ लिमा आअ़तै-त वला मुअ़तिय-अ़ लिमा मनअ़-त व ला यन्फ़उ़ज़लजद्दी मिन्कल जद्दु (सहीह मुस्लिम 1338)

- لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ
  ला हौ-ल वला क़ुव्वा-त इल्ला बिल्लाह:, ला इलाहा इल्लाल्लाहु वला नअ़-बुदु इल्ला इय्याहुलहुन निअ़मतु व लहुल फ़ज़्लु व लहुष्षनाउल हसनु (सहीह मुस्लिम 594a)

- لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ
  ला इलाहा इल्लाल्लाहु मुख़्लिसी-ना लहुदी-न व लौ करिहल काफ़िरून (सहीह मुस्लिम 594a)

- اَللّٰهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ
  अल्लाहुम्-म-अइ़न्नी अ़ला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुसनी इबादतिक (अबू दाऊद 1522)

- رَبِّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ
  रब्बी क़िनी अज़ाबका यौमा तबअ़षु इ़बादका (सहीह मुस्लिम 709)

- اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ
  अल्लाहुम्-म-इन्नी अऊ़ ज़ुबिका मिनल कुफ़्रि वल् फ़क्रि, व अ़ज़ाबिल क़ब्रि (सुनन नसाई 1348)

- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي
  अल्लाहुम्-म-मग़्फ़िरली व रह़मनी व अहदिनी व आ़फ़िनी व रज़ुकनी (इब्ने ख़ुज़ैमा 744)

- اَللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ......
  अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवलहय्यूल क़य्यूम... (आयतुल कुर्सी) (सिलसिला: सहीहा : 972)

- قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ... — सूर: अल इख़लास़ — سورة الاخلاص
- قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ... — सूर: अल फ़लक़ — سورة الفلق
- قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ... — सूर: अन्-नास — سورة الناس

  हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 1 मर्तबा पढ़ें. (अबू दाऊद 1523)

- سُبْحَانَ اللّٰهِ — सुब्हान अल्लाह: — 33 बार | اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ — हम्दुलिल्लाह: — 33 बार | اَللّٰهُ أَكْبَرُ — अल्लाहु अकबर — 33 बार (सहीह मुस्लिम 1352)

- لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
  ला इलाहा इल्लाल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अ़ला कुल्लिशईन क़दीर (सहीह मुस्लिम 1352)

Aye Logon! Apne Khaliq, Maalik aur Rabb ko Pehchaano Isi se iltija, Faryaad, istimdaad aur istighaasa kar, yaad rakho Tauheed ke baghair kuch bhi nahi, yahi awwal yahi aakhir hai, Shirk se badha koi paap, gunah, zulm aur ghinaona kaam nahi, mushrik ki sau (100) saala (years) zindagi se muwahid ki ek din ki zindagi behtar hai.

Shaikh **Tahir Sanabili** Hafizuhallah

Dawat-e-Tauheed Islamic Group's

dawatetauheed.com syednaushadhussain@gmail.com

Moula Hussain +91-90600 00771